लोक कला माध्यमों के लिए विज्ञान लेखन कार्यशाला

१०-१४ सितम्बर २०००

सम्पादक

❖ डॉ0 शिवगोपाल मिश्र
प्रधानमंत्री, विज्ञान परिषद् प्रयाग

❖ डॉ0 मनोज पटैरिया
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी
राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, नई दिल्ली

❖ श्री विजय चितौरी
सेवा फाउंडेशन, इलाहाबाद

सन् 1913 में अपनी स्थापना के बाद से विज्ञान परिषद् प्रयाग अनवरत राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से विज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं ने भी इस दिशा में कार्य प्रारम्भ किया जिसके अच्छे परिणाम भी प्राप्त हुये किन्तु इनका प्रभाव नगरीय व उपनगरीय क्षेत्रों तक ही सीमित रहा। देश के लाखों गाँवों में जहाँ भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, विज्ञान का प्रकाश अभी तक नहीं पहुँच सका है। इसका मुख्य कारण विज्ञान की जटिल भाषा ही रही है।

विज्ञान परिषद् प्रयाग ने यह अनुभव किया कि ग्रामीण अशिक्षित व अर्धशिक्षित जनता के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का सर्वोत्तम माध्यम ग्रामीण अंचलों में सदियों से प्रचलित लोक कलाएँ सिद्ध हो सकती हैं। लोकगीत, नाटक, नौटंकी, कठपुतली आदि लोक विधाओं के माध्यम से ग्रामीणों को वैज्ञानिक सूचनाएँ एवं ज्ञान देकर सदियों के अंधविश्वास एवं रूढ़ियों से उन्हें मुक्त किया जा सकता है।

इसी उद्देश्य को लेकर विज्ञान परिषद् प्रयाग ने सेवा फाउन्डेशन इलाहाबाद से, जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में जनजागरण तथा समाज कल्याण के कार्य कर रही है, संपर्क कर एक कार्यशाला आयोजित करने की योजना तैयार की जिसमें विभिन्न लोक विधाओं के कलाकारों को प्रशिक्षित कर उनके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान के विविध पक्षों के लोकप्रियकरण का कार्य किया जा सके। फलत: दोनों संस्थाओं ने एक संयुक्त प्रस्ताव बनाकर राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, भारत सरकार, नई दिल्ली को प्रेषित किया। इस प्रस्ताव पर सदाशयतापूर्वक विचार करते हुए राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद्, भारत सरकार ने वर्ष 2000 के लिए विज्ञान परिषद् प्रयाग को, सेवा फाउंडेशन, इलाहाबाद के सहयोग से लोक माध्यमों के लिए विज्ञान लेखन पर एक 5 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन करने के लिए एक लाख रुपये की राशि अनुदान के रूप में प्रदान की। इस कार्यशाला के संयोजक विज्ञान परिषद् प्रयाग के प्रधानमंत्री डॉ० शिवगोपाल मिश्र एवं सह संयोजक सेवा फाउंडेशन के श्री विजय चितौरी मनोनीत हुए।

यह निश्चय हुआ कि कार्यशाला सितम्बर मास में 10 से 14 तिथियों के मध्य सम्पन्न कराई जाय। फलत: जुलाई-अगस्त मास में ही एतदर्थ विज्ञापन प्रकाशित कराया गया। इसके बाद जो आवेदन पत्र आये, उनकी छँटनी करके 40 लोक कलाकारों एवं लेखकों को इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए चुना गया। यह भी निश्चित किया गया कि यह कार्यशाला विज्ञान परिषद् प्रयाग के सभागार में कराई जाय और यहीं पर प्रशिक्षार्थियों के रहने, नाश्ते तथा भोजन का प्रबन्ध किया जाय। इस कार्य के लिए एक प्रबन्ध समिति भी बनाई गई जिसका निरीक्षण डॉ० सुनील कुमार पाण्डेय तथा देवव्रत द्विवेदी के जिम्मे था। लोक कलाकारों से सम्पर्क के लिए सेवा फाउंडेशन की ओर से श्री सौरभ खरे को नियुक्त किया गया।

कार्यशाला के लिए विशेषज्ञों का चुनाव

इस कार्यशाला के कलाकारों को प्रशिक्षित करने के लिए 13 सदस्यीय समिति गठित की गई जिसमें वाह्य तथा स्थानीय विशेषज्ञ सम्मिलित किये गये। उनकी सहमति प्राप्त की गई। वाह्य विशेषज्ञों में डॉ० भारतेन्दु प्रकाश इस कार्यशाला में किन्ही कारणों से अपना सहयोग नहीं दे पाये।

कार्यशाला का उद्घाटन

इस कार्यशाला का उद्घाटन 10 सितम्बर 2000 को 10 बजे प्रातः विज्ञान परिषद् के सभागार में उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद के निदेशक श्री नवीन प्रकाश (आई.ए. एस.) द्वारा दीप जलाकर किया गया। तत्पश्चात् सरस्वती वन्दना हुई। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों, विशेषज्ञों के अलावा आमन्त्रित प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा प्रेस, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

प्रथम दिन उद्घाटन के बाद कार्यक्रम के अनुसार प्रथम सत्र में कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया। तदुपरान्त विभिन्न लोकविधाओं के लिए प्रतिभागियों को अपना परिचय, अपनी रुचि बताने के लिए कहा गया।

दूसरे दिन विभिन्न विधाओं की सैद्धान्तिक बातें बताकर प्रतिभागियों को अपना विषय चुनने और समूह अभ्यास करने के लिए कहा गया। शाम को प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न किया।

तीसरे दिन सांस्कृतिक स्थल के भ्रमण हेतु सारे प्रशिक्षणार्थी तथा विशेषज्ञ इलाहाबाद से 30 किमी. दूर गंगा के किनारे स्थित, श्रृंगवेरपुर गये। रात्रि में पुनः गायन-वादन का कार्यक्रम चला।

चौथे दिन व्याख्यान के बाद द्वितीय तथा तृतीय सत्र में प्रशिक्षणार्थियों ने अपने द्वारा लिखित रचनाओं को संशोधन हेतु विशेषज्ञों के समक्ष रखा और फिर अभ्यास किया।

पाँचवे दिन प्रातःकाल से ही प्रस्तुतियाँ चलती रही। अपरान्ह में समापन समारोह की व्यवस्था की गई थी। इसके लिए श्री यू.एस. तिवारी, निदेशक, प्रयाग संग्रहालय मुख्य अतिथि थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता विज्ञान परिषद् के उपसभापति डॉ० हनुमान प्रसाद तिवारी ने की। मुख्य अतिथि ने 37 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भविष्य में ऐसी ही कार्यशालाओं के माध्यम से विज्ञान के संदेश को ग्रामीण क्षेत्रों तक ले जाने की आवश्यकता है।

कार्यशाला में तैयार की गई लोकविधा की रचनाएँ

कुल 37 रचनाएँ तैयार हुई जिनका मूल्यांकन विशेषज्ञों द्वारा किया गया। परिणाम इस प्रकार रहे-

श्रेणी	विज्ञान लोकगीत	विज्ञान नाटक	विज्ञान नौटंकी	विज्ञान नुक्कड़ नाटक	अन्य रचनाएँ	कुल
ए	10	-	2	1	2	15
बी	13	8	-	-	-	21
सी	-	1	-	-	-	1
डी	-	-	-	-	-	-
	23	9	2	1	2	37

संस्तुतियाँ

यह पाया गया कि लोक कलाकारों में अल्प समय में ही रचना करके प्रस्तुत करने की अभूतपूर्व क्षमता है।

लोक कलाकारों द्वारा विज्ञान विषयक प्रस्तुतियों के सफल लेखन, मंचन एवं गायन को देखते हुए यह सुझाव है कि अधिकाधिक ग्रामीण अंचल के कलाकारों को विज्ञान विषयक रचनाएँ लिखने और अपनी प्रस्तुति द्वारा जनता को आकृष्ट एवं प्रभावित करने के लिए वर्ष में कम से कम दो कार्यशालाएँ आयोजित हों जिनमें नवीन विषयों को सम्मिलित किया जा सके।

प्रकाशन

लोक कलाकरों द्वारा प्रदत्त प्रस्तुतियों को संकलित करके पुस्तकाकार किया जा रहा है। आशा है यह पुस्तिका भविष्य में ऐसे कार्यक्रमों के लिए मार्गदर्शिका का कार्य करेगी।

पुस्तिका के सम्पादन में डॉ० मनोज पटैरिया तथा श्री विजय चितौरी ने जो सहायता पहुँचाई, उसके लिए मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

- शिवगोपाल मिश्र
संयोजक, कार्यशाला
विज्ञान परिषद् प्रयाग
महर्षि दयानन्द मार्ग
इलाहाबाद-२११००२

लोक कला माध्यमों के लिए विज्ञान लेखन कार्यशाला
(१०–१४ सितम्बर २०००) कार्यक्रम

10.9.2000 रविवार

पूर्वाह्न	10.00	पंजीकरण
	11.00	कार्यशाला का उद्घाटन श्री नवीन प्रकाश (आई.ए.एस.) द्वारा
दोपहर	12.30	जलपान
अपराह्न	01.00	प्रथम सत्र (व्याख्यान–1)
	02.00	भोजन
	03.00	द्वितीय सत्र (प्रतिभागियों का परिचय तथा वर्गीकरण)
सायं	05.00	चाय
	07.00	सांस्कृतिक कार्यक्रम
रात्रि	08.30	भोजन

11.9.2000 सोमवार

पूर्वाह्न	09.00	जलपान
	10.00	प्रथम सत्र (व्याख्यान–2)
	11.30	चाय
मध्याह्न	12.00	द्वितीय सत्र (समूह अभ्यास)
अपराह्न	02.00	भोजन
	02.30	तृतीय सत्र (समूह अभ्यास)
सायं	05.00	चाय
	07.00	सांस्कृतिक कार्यक्रम
रात्रि	08.30	भोजन

12.9.2000 मंगलवार

पूर्वाह्न	09.00	जलपान
	10.00	सांस्कृतिक महत्व के स्थल (श्रृंगवेरपुर) के भ्रमण हेतु प्रस्थान
सायं	05.00	भ्रमण से वापसी/चाय
	07.00	सांस्कृतिक कार्यक्रम
रात्रि	08.30	भोजन

13.9.2000 बुद्धवार

पूर्वाह्न	09.00	जलपान
	10.00	प्रथम सत्र (व्याख्यान–2)
	11.30	चाय

मध्याह्न	12.00	द्वितीय सत्र (समूह अभ्यास)
अपराह्न	01.30	भोजन
	02.30	तृतीय सत्र (समूह अभ्यास)
सायं	05.00	चाय
	07.00	सांस्कृतिक कार्यक्रम
रात्रि	08.30	भोजन

14.9.2000 गुरुवार

पूर्वाह्न	09.00	जलपान
	10.00	प्रथम सत्र (अन्तिम प्रस्तुतियाँ)
	11.30	चाय
मध्याह्न	12.00	द्वितीय सत्र (प्रस्तुतियाँ जारी)
अपराह्न	01.30	भोजन
	02.30	समापन समारोह
सायं	04.00	चाय

लोक कला माध्यमों के लिए विज्ञान लेखन कार्यशाला (१०-१४ सितम्बर 2000) के प्रतिभागियों की सूची

क्र. सं.	नाम	पता
1.	श्री सुललित कुमार सिसोदिया	90ए/5/1, बाघम्बरी गद्दी, अल्लापुर, इलाहाबाद फोन : 502319
2.	सुशील प्रताप सिंह लोधी	35ई, डब्ल्यू.एस. अशोक नगर, (कब्रिस्तान के पास) इलाहाबाद
3.	दीपक प्रताप सिंह लोधी	35 ई, डैल्यू. एस अशोक नगर, (कब्रिस्तान के पास) इलाहाबाद
4	राजेन्द्र प्रसाद यादव	समसपुर सोरांव, इलाहाबाद
5.	अरुण कुमार शुक्ला	नीबी लोहगरा इलाहाबाद-212107
6	त्रिफला प्रसाद	नाका, इलाहाबाद
7	पृथ्वी राज सिंह	18184/6सी/1 तिलक नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद
8.	अजय कुमार विश्वकर्मा	अतरसुइया, जारी, इलाहाबाद
9.	शिवभान सिंह	चितौरी, जसरा, इलाहाबाद
10.	अनन्त कुमार	16/110ए न्यू बस्ती, सोहबतिया बाग, इलाहाबाद
11.	चतुरमुनि वर्मा	शान्ती नगर, सेमरी, जारी, इलाहाबाद
12.	शिव आनन्द	226, कर्नलगंज, इलाहाबाद
13.	शिवनरेश विश्वकर्मा	अतरसुइयाँ, जारी, इलाहाबाद
14.	विजय कुमार विश्वकर्मा	अतरसुइयाँ, जारी, इलाहाबाद
15.	उत्तम कुमार राय	137/बी, राजरूपपुर, इलाहाबाद फोन : 610168
16.	प्रदीप कुमार सागर	222, राजापुर, ऊँचवा, इलाहाबाद
17.	विद्या नरेश विश्वकर्मा	अतरसुइया, जारी, इलाहाबाद
18.	पारस नाथ पाल	अतरसुइया, जारी, इलाहाबाद
19.	राय बहादुर बिन्द	अतरसुइया, जारी, इलाहाबाद
20	अवध नरेश विश्वकर्मा	अतरसुइया, जारी, इलाहाबाद
21.	सुनील कृष्ण	पिडोरिया, सोरांव, इलाहाबाद
22.	चन्द्र प्रकाश	टकरी तालुका कं. पो. कांटी, इलाहाबाद
23.	राजेश कुमार	108 फतेहपुर बिछवा, इलाहाबाद
24.	त्रिभुवन नाथ पटेल	बुदांवा (काशी का पूरा) जसरा, इलाहाबाद
25.	लाल चन्द्र पटेल	मौहरिया जसरा, इलाहाबाद
26.	राजीव कुमार शुक्ल	कीटगंज, इलाहाबाद
27.	नागेन्द्र प्रताप सिंह (जादूगर)	मोरई, मलाक हरहर, फाफामऊ, इलाहाबाद फोन : 647494
28.	राधेश्याम पटेल	बोंगी, घूँरपुर, इलाहाबाद
29.	राम जतन प्रजापति	डीघी, इस्माइलगंज, इलाहाबाद
30.	विनेश कुमार	पांडर, जसरा, इलाहाबाद
31.	मुकेश कुमार	घनश्याम नगर, रेलवे कालोनी, इलाहाबाद
32.	आनन्द कुमार	496ए बलईपुर लोको कालोनी
33.	राकेश प्रताप सिंह	पचदेवरा, अटरामपुर, इलाहाबाद
34.	सुभाष चन्द्र मिश्र	पचदेवरा, अटरामपुर, इलाहाबाद
35.	अजय प्रकाश	ब्लाक नं. 14 फ्लैट नं. 12 शिवनगर कालोनी, एल.आई.जी. अल्लापुर इलाहाबाद-211006 फोन : 501771
36.	धर्म शंकर दीक्षित	699 शंकर घाट, तेलियरगंज, इलाहाबाद फोन : 545587
37.	अभिमन्यु कुमार शर्मा	738 पुराना कटरा, इलाहाबाद

लोक कला माध्यमों के लिए विज्ञान लेखन कार्यशाला (१०-१४ सितम्बर २०००) की विशेषज्ञ समिति

1. डॉ० शिवगोपाल मिश्र
प्रधानमंत्री, विज्ञान परिषद् प्रयाग
महर्षि दयानन्द मार्ग,
इलाहाबाद–210002
फोन : 460001

2. प्रो० रमेश चन्द्र तिवारी
एन–8/200, भगीरथ नगर
सुन्दरपुर, वारणसी–5

3. श्री रवीन्द्र खरे
1582, सरस्वती कॉलोनी
जबलपुर –482002
फोन : (निवास) 346730
(आफिस) 407562

4. श्री नरेश मिश्र
784, नेह निकुंज, बाघम्बरी गद्दी
दारागंज, अल्लापुर, इलाहाबाद
फोन : 503010

5. श्री विजय चितौरी
ग्रामोदय प्रकाशन
घूरपुर, इलाहाबाद

6. डॉ० सुनील कुमार पाण्डेय
संयुक्त मंत्री
विज्ञान परिषद् प्रयाग
महर्षि दयानन्द मार्ग,
इलाहाबाद–211002
फोन : 460001

7. श्री देवव्रत द्विवेदी
439ए, बासुकी खुर्द, दारागंज,
इलाहाबाद–211002
फोन : 504018

8. सौरभ खरे
612, बाघम्बरी गद्दी
(गीतांजली कला केन्द्र संगीत
विद्यालय), अल्लापुर, इलाहाबाद
फोन : 501960

9. श्री उदय
10/10, वीन्डसर प्लेस, लखनऊ
फोन : 239553

10 अमित कुमार रॉय
एस./2, बी.जी.एस. योजना,
शॉपिंग सेन्टर, रामानन्द नगर
अल्लापुर, इलाहाबाद

11. राजेश कुमार
187ए, बलईपुर रेलवे कॉलोनी
इलाहाबाद

12. डॉ० चन्द्रशेखर मिश्र
एमेरिटस प्रोफेसर, रसायन
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

13. डॉ० भारतेन्दु प्रकाश
विज्ञान शिक्षा केन्द्र
संचार केन्द्र, सिविल लाइन्स
बांदा (उ.प्र.)

विकास गीत

अरुन कुमार शुक्ल 'अंशुल'
नीबी, लोहगरा, इलाहाबाद

पिया संग-संग किसानी हमहु करवइ
गरीबी से जंग लड़वइ ।
चाहे हो धूप चाहे वरसे वदरिया,
चाहे वहे ठंडी-ठंडी वयरिया,
हर कियरिया हम आपन सजउवइ
गरीबी से जंग लड़वइ ।। पिया संग-संग.

नई-नई विधि से हम करवई किसानी
नया नया बीज, समय पर खाद पानी
एहिं खेतवा में सोना हम उगइवइ
गरीबी से जंग लड़वइ ।। पिया संग-संग.

पंत नगरिया से वियना मंगउवइ
गोवर से कम्पोस्ट खाद वनउवइ
यही देसवा में जर्सी हम वंधउवइ
गरीबी से जंग लड़वइ ।। पिया संग-संग.

छोटा सा परिवार आपन वनउवइ
अँगना का स्वर्ग सा सुन्दर वनउवइ
पिया कन्धा से कन्धा हम मिलउवइ
गरीबी से जंग लड़वइ ।। पिया संग-संग.

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

त्रिभुवन नाथ पटेल
बुदावॉ (काशी का पूरा) जसरा,
इलाहाबाद

केतना सुन्दर वाटइ मौका ल्य विचार मितवा ।।
घर में लकड़ी तू जलउल्य उटे धुवाँ अधिकाई,
वही बनि के रोग चूसइ सारी कमाई,
सव केउ ले गोवर-गैस सिलेन्डर ले एक वार मितवा
केतना सुन्दर ....।।

अगर न तोहसे होए एतना एक वा सरल उपाई
खोदि के गड्ढा गोवर डालि ल्य गोवर गैस वनाई
उही से वैटे-वैठे कइल्य घर उजियार मितवा,
केतना सुन्दर ....।।

अहै विज्ञान के इहइ सन्देसा सव केउ ल्य अपनाई
खुद निरोग अउरउ के वनावा तू सारा समुदाई
अपने घर वइठे तू करा सवइ उपचार मितवा
केतना सुन्दर ....।।

अपने घर के भीतर वाहर सव केउ कर सफाई
छोट से लइके वड़ा तलक सव हाथ धोइ के खाई
सबके सन्देसा पहुँचाई बार बार मितवा
केतना सुन्दर ....।।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

अजय कुमार विश्वकर्मा
जवाहर लाल नेहरू स्मारक
इण्टर कॉलेज, जारी, इलाहाबाद

भइया देसवा के स्वर्ग बनाइ द
प्रदूषण भगाइ दा न ।।

जगह-जगह पेड़-पौधा खूब लगवावा,
हरा भरा आपन तू देसवा बनावा
इहइ सबसे संदेस बताइ दा
प्रदूषण भगाइदा न ।।

घर और आँगन का खूब सजाव द,
अगल बगल फुलवा के बाग लगाव द,
सुखद बयरिया म जीवन बिताइ दा ।
प्रदूषण भगाइदा न ।।

सब जन मिलि कै एकता बनावा,
एक साथ मिलजुलि कै गउवाँ सजावा,
गंगा जमुना का स्वच्छ बनाइ दा ।
प्रदूषण भगाइदा न ।।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

त्रिफला प्रसाद
अमिलिया, इलाहाबाद

माना वतिया इहइ हमारी
मोर हजारी विरना ।।
कपट कटारी, पर नारी से , जिन कीन्हो सहवास ।
ना ही एड्स रोग से होइही जीवन सत्यानाश ।।
ई है लाइलाज विमारी ।। मोर.

भूत-प्रेत ओझा सोखा से सव केऊ नाता तोड़ा ।
घड़ा अन्धविश्वास भइया ज्ञान तरक से फोड़ा ।।
जोड़ा घर-घर आपसदारी ।। मोर.

पेड़ विरिक्ष वारी फुलवारी जेतनइ जने लगउल्या ।
मन्द सुगन्ध हवा शीतल से, तन की तपिस बुझउल्या ।।
महके छपरा महल अटारी ।। मोर.

दमपत्ति जीवन सुखी तवइ, परिवार रहे जब छोटा ।
तवइ अँटे घर भर के खाना कपड़ा टाठी लोटा ।।
भागे दूर गरीवी सारी ।। मोर.

विन शिक्षा जिनगी बा माटी यह पर धरा धियान ।
चिट्ठी पाती लिखइ पढ़इ के भइया कुछ हुँ गियान ।।
विद्या जनजीवन हितकारी ।। मोर.

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

विजय कुमार विश्वकर्मा (पप्पू)
[illegible] जारी बाजार इलाहाबाद
(उ.प्र.)

वैज्ञानिक ढंग से करव हम किसनिया
कि धनवा से लहरे सिवनिया ।
लगतइ अषढ़वा जोताउव हम खेतवा
लइ जाइ के माटी देखाउब हम ब्लकवा।। कि धनवा से

खेतवा में देवै खदिया और पनिया
ब्लकवा से केचुआ मंगउवै हम सजनिया
नील हरित शैवाल से चमकउवै हम किसनिया।। कि धनवा से

खेतवा में हमरे देखाये ला धनवा
धनवा के वलिया मोहेला सव के मनवा
काट के लिआउव हम धरवइ खरिहनिया ।। कि धनवा से

कुछ धान रखवइ कुछ मण्डी म वेचवइ
अगले साल हम ट्रैक्टर लिअउवइ
पप्पू परिवार सव करिहइ किसनिया ।। कि धनवा से

अगली वरस हम धनवा के सथवा म पलवइ मछलिया
अच्छी वीज खाद से हम करिवै खेतीवरिया
नये-नये ढंग से गढउबै झुलनिया ।। कि धनवा से

ट्रैक्टर पर लइके हम मेलवा घुमउवै
अपने चुन्नू-मुन्नू के डाक्टर वनउवै
बीती जाला सारी जिन्दगनिया ।। कि धनवा से

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

चन्द्रप्रसाद उर्फ दयाशंकर कुशवाहा
ग्राम–टिकरी, पोस्ट–कांटी जसरा,
इलाहाबाद

आयल बाटइ बाढ़ क महीना, प्रदूषण भइले हो भारी (टेक)
होय प्रदूषण जब फइले बीमारी, भइले हर रोग तरह-तरह बीमारी ।
जइसे मलेरिया, हैजवा, प्रदूषण भइले हो भारी ।। आयल बाटइ.

प्रदूषण भगावइ खातिर पेड़ लगावा
पेड़ रूख लगाइ हरितक्रान्ति लियाव
होई जाये जग कल्यनवा, प्रदूषण भइले हो भारी ।। आयल बाटइ.

देशवा मँ आज हमरे पन्नी के जमनवा
पन्नी रोग आहइ बात मोर मान
पन्नी से आइ गवा बुड़वा, प्रदूषण भइले हो भारी।। आयल बाटइ.

घरवा के भीतर-बाहर करय खूब सफाई
अगल-बगल, आस-पास सबके समझाई
सफाई रोग के पहरुवा, प्रदूषण भइले हो भारी।। आयल बाटइ.

अपने-अपने घर के पास गढ़हा खोदावा
घर कूड़ाकरकट गढहा में फेकावा
पन्नी पर रोक लगावा, प्रदूषण भइले हो भारी।। आयल बाटइ.

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

अवधेश विश्वकर्मा
ग्राम–अतरसुइया जारी बाजार
इलाहाबाद

जनसंख्या के रोगवा देश मँ हमरे सबसे ज्यादा सतवले वा (टेक)
रोज रोज बाढ़े समस्या के पेड़
नाही लगावा अब लड़िकन के ढेर हो
देश में गरिबवा जनवले वा
जनसंख्या के रोगवा देश म हमरे
संख्या पर कइल विरन रोकथाम हो
काहे करेला अनजान वाला काम हो
काहे ज्यादा लड़िका जनमवले वा ।। जनसंख्या के.

संख्या नियंत्रण पे कइला विचार हो
नया नया नियम निकाले सरकार हो
गाँव गाँव मँ सुविधा दिअवले बा ।। जनसंख्या के.

कच्ची उमर मँ न करला तू शादी
दुइठे ललन नाही ज्यादा आवादी
इ बतिया सबसे बतवले बा ।। जनसंख्या के.

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत
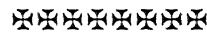
राकेश प्रताप सिंह

हमका हरी सब्जी बजरिया से लियाय देया ।
जिन्दगी बचाइ लेया ना ।।
पात गोभी, सलाद ले आय खाके
बेरी बेरी रोग भगाया
फिर लाल टमाटर खियाइ दिया ।
जिन्दगी बचाइ लेया ना ।।

लकड़ी चूल्हा जो जलवाया
कैंसर रोग को बोलवाया
गैस चूल्हा तो हमके लियाइ देया ।
जिन्दगी बचाइ लेया ना ।

शुद्ध पर्यावरण बनावा
द्वारे नीम का पेड़ लगावा
जेहमे सावन मा झुलनवा डलवाइ देया
जिन्दगी बचाइ लेया ना ।

✠✠✠✠✠✠✠✠

परिवार नियोजन

पृथ्वी राज सिंह
18/84/6सी/1, तिलक नगर
अल्लापुर, इलाहाबाद–211006

असहीं धरतिया के फाटेला छतिया–२
आवादी न वढ़उला देश वरवाद होला
ढेर ललनवा अरे ढेर ललनवा
के मति जनमावा ऐ भाई जी
तू मति जनमावा–३ ऐ भाई जी

एगो ललनवा के ललनवा कहिएं–२
दूजे ललनवा से मन वहलहिएं
वेसी ललनवा अरे वेसी ललनवा
के फूटल है करमवा ऐ भाई जी
के कूटल है करमवा–३ ऐ भाई जी

ढेर ललनवा के कइसे तू पढ़इबा –२
खइवा पीवा में तू अरे लड़वा झगड़वा
राक्षस खानदनवा अरे राक्षस खानदनवा
साकार मत वनावा ऐ भाई जी
साकार मत बनावा –३ ऐ भाई जी

लड़का लड़की का तू जल्दी भेद ये मिटावा
गर्भ निरोधक गोलियाँ और टीका तू लगवावा
लूप लैम्प से अच्छा अरे लूप लैम्प से अच्छा
जलदी करवा दमनवा –३ ऐ भाई जी

नसबंदी करवाला वढ़िया नियम वा
निरोध से अच्छा तू करवा दमनवा
मान मान भइया अरे मान मान भइया
पृथ्वीराज के कहनवा ऐ भाई जी
पृथ्वीराज के कहनवा ऐ भाई जी
पृथ्वीराज के कहनवा ऐ भाई जी

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

विद्यानरेश विश्वकर्मा

देशवा के सुन सव नर नरिया, लड़िका दुइटे जनमें हमार गोरिया
लड़िका दुइटे केवल सव जनमउले
दुनहू ललनवा के जम के पढ़वले,
सेइ पालि करे वड़वार गोरिया, लड़िका दुइटे जनमें हमार गोरिया।

एक टे ललनवा जमि के करे ला किसनिया,
दुसरा सीमा पर लगावेला निशनिया
आगे वढ़ी देशवा हमार गोरिया, लड़िका दुइटे जनमे हमार गोरिया ।

निकरी विज्ञान के नीति नयी अपनावा
लूप लगवावा नसवंदी करवावा
तवई होये सीमित परिवार गोरिया, लड़िका दुइटे जनमें हमार गोरिया ।

छोटा परिवार सव सुख के आधार हो,
लड़िका चाहे लड़की केवल दुइन आधार हो
देशवा के होये उद्धार गोरिया, लड़िका दुइटे जनमें हमार गोरिया ।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

उत्तम कुमार राय
राजरूपपुर मांहरिया इलाहाबाद

मेरी उदासियां कोई तो लगा लो मुझको सीने से
कि मैं थक चुका हूँ इस तरह रो रो के जीने से
ये कैंसर हृदय के रोगों की उत्पत्ति होती है धुंये से
कमजोर दिमागों के कारण भी होती है जहर? धुंआ
किनारा दूर-किनारा दूर खुशियाँ
किनारा दूर नजर क्यों आता है मिटती है जिन्दगानियाँ।
मेरी उदासियाँ......

गंदगियों के ये ढेर जमाढ़ दिखाती है तादात में
हर तरफ मतलव भारीशी के हैं भीड़ नकाव ओढ़े
ले चलो मुझे - ले चलो मुझे मेरे माटी में
ले चलो गाँव की ओर कूड़ा करकटों से दूर दे दो हरियालियाँ
मेरी उदासियाँ......

शहर का ये ध्वनि प्रदूषण और ये वायु प्रदूषण
और भीड़-भाड़ ये बेचैनियाँ रुलाती है हमें
लाओ कोई-लाओ कोई स्वच्छ वातावरण
नीमवा के ठंडी छाया वलखाती नदियाँ
मेरी उदासियाँ......
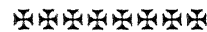
✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

पारसनाथ पाल
अतरसुइया, जारी
[illegible]

स्वच्छता से घरवा सजावा मितवा हो
मिलि के रोगवा के दूर भगावा मितवा हो।।
स्वच्छ पानी पियै खातिर हैण्डपम्प से मगावा
पानी के ढक के रखा खुला न रखावा
ताजा भोजन सवके खिलावा मितवा हो।

सावुन राख से हाथ के धुलाई
गउवाँ के साफ रखा घर अंगनाई
स्वच्छ शौचालय वनावा मितवा हो।

ओर.आर.एस. या चीनी नमक के घोल वनवावा
जव होवे डायरिया उल्टी दस्त में पिलावा
ब्लीचिंग कुंआ में डलावा मितवा हो ।
मिलि के रोगवा के दूर भगावा मितवा हो ।।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

पारसनाथ पाल
[illegible] जारी
इलाहाबाद

स्वच्छता से घरवा सजावा मितवा हो
मिलि के रोगवा के दूर भगावा मितवा हो।।
स्वच्छ पानी पियै खातिर हैण्डपम्प से मगावा
पानी के ढक के रखा खुला न रखावा
ताजा भोजन सबके खिलावा मितवा हो।

सावुन राख्र से हाथ के धुलाई
गउवाँ के साफ रखा घर अंगनाई
स्वच्छ शौचालय वनावा मितवा हो।

ओर.आर.एस. या चीनी नमक के घोल वनवावा
जव होवे डायरिया उल्टी दस्त में पिलावा
व्लीचिंग कुंआ में डलावा मितवा हो ।
मिलि के रोगवा के दूर भगावा मितवा हो ।।

✠✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

दिनेश कुमार
राष्ट्रीय सचा कर्मी
पाण्डर–जसरा, इलाहाबाद

सब केऊ पेड़वा लगावल हो, मनुज निरमोहिया
नदियन के वाढ़इ से, पालीथिनवा के फेंकइ से,
नदियन, नालन के वढ़वा से वचाय ल हो मनुज निरमोहिया

घरवा में हरियर सब्जियन के उगावल सब नर–नारी,
लड़िकन के रतौंधी से, भूत, परेतवन से वचाय ल हो मनुज निरमोहिया

हैजा और दस्त से, पशुवन के हारमोनवा से
प्रिय सब ज्ञानी मिलि वचाय ल हो मनुज निरमोहिया।।

पशुवन के लशवा से, सुअरन के मंसवा से,
मनमोहनी अमृत गंगा को वचाय ल हो मनुज निरमोहिया।।

आवादी के वाढ़इ से, खुनवा के कमी होवै से
गर्भ निरोधवा के अपनाय ल हो मनुज निरमोहिया।।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

धर्मेश
699 शंकरघाट कालोनी
इलाहाबाद

करवै किसानी जवानी क किरिया
देवय दुखवा विसार ए भइया। गउँवा मँ अइहै वहार ए भइया।

१. खेतवा नया नया वीज हम लगउवय
कइके किसानी जहाँ के देखउवय
करतब में कउनों कसर नाहीं रखवय
देवय पसिनवा निकार, ए भइया।। गउँवा मँ....

२. धरती धरमवा के हमारी मयरिया
इनकी सरन मँ हम जिनगी वितउवय
लेहिया सनेहिया से सिंचवै सिवनिया
करवै सपनवा सकार ए भइया। गउँवा मँ....

३. चमकी विजुरिया से गउँवा क खोरी
ढिवरी क सुधिया भुलाय जइहै गोरी
हमरो अँगनवा मँ उतरी सरगवा
हुलसी परनवा निहार ए भइया। गउँवा मँ....

✠✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

सुललित कुमार सिसोदिया

कवना गाँव में पेड़ ना होला
केकरा पेड़-पौधन से प्यार ना होला
के ना जाने कि पेड़ ऑक्सीजन देला
पेड़ से वढ के जीवन-रक्षक ना होला।।
डाली कटव जे पेड़ के, त परवे करी
वाढ़ आई त, गउँआ डुववे करी (टेक) डाली..

१. चोरी-सीनाजोरी से पेड़वा जे काटेला
वात इत मान भइया, वड़ा दुःख पावेला
थकल हारल राही आराम करे छउँवा
कटव जे पेड़वा त, देही गारी गउँवा
कमी होई जे ऑक्सीजन के त जन जन मरवे करी,
वाढ़ आई त ऊपरी माटी कटवे करी..
डाली कटव जे पेड़ के त.... वाढ़ आई त गाँव सारा डूबे करी..

२. पेड़वा लगइव त सभे गुन गाई,
फलत-फूलत देख मन हरषाई। हियवा जुड़ाई
खाये खाती फल तरस जाई जियरा,
हवा पानी वातावरण साफ मिलवे करी..
वोली कोयल के सुने वदे तरसवे करी
डाली कटव........

३. होते सांझ विहान, तोहरा से न रहाई,
कहि मनवाए भाई, चल वगिया देख आई
तुलसी अंगना में पुजाली, करे नीम रखवाली
थाती है लरकन के पीपर के डली
पीपल तुलसी के पुजाई सदा होइवे करी,
पोसव-पालव जे पेड़ के फल मिलवे करी....

४. रोज खइब तुलसी पाती दन्तवन नीम के लगाई
कैंसर रिस्क न उटाई, पायरिया दुरे-दुरे जाई
रोग बोलावे जवन मौत के पीछा छूटवे करी
कटव डाली जे पेड़ के त परवे करी.....

५. जन जन जाई जव इ संदेशवा
वदलिहें ना लोग, चाहे वदल जाए देशवा
इ वतिया हमार लोग मनवे करी
लगइव पौधा प्रदूषण दूर होइवे करी...
कटव पेड़ त लागी पाप तोहरा लगवे करी
डाली कटव..............

✠✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

लाल चन्द्र पटेल
मोहरिया जसरा
इलाहाबाद

काल वा प्रदूषण सुना है ववुआ
सव केहू मिलि के कर दूर ववुआ।।

वरसा जो पानी नदी ताल वाढ़े,
किरवा-फटिंगवा सव मुँह काढ़े,
कारण वीमारी क दूर ववुआ
सव केहू मिलि के कर दूर ववुआ।
धरय धियान भइया कुवना के पानी,
डालि के ब्लीचिंग कर शुद्ध पानी,
स्वस्थ रहे तन भरपूर ववुवा
सव केहू मिलि के कर दूर ववुआ।।

कुआँ के जगतिया पर न केउ नहाय,
न गन्दा पानी कुआँ मँ गिराय,
वहि से रोग वाढ़े अउर ववुवा
सव केहू मिलि के कर दूर ववुआ।।

ताल तलैया मँ पशु जो धुलाय,
वह मँ दवाइ जरूर डलाय,
ऐसन जल पिय न कर भूलि ववुवा
सव केहू मिलि के कर दूर ववुआ।।

घर के वगल मँ कूड़ा जमाय
नाहीं वीमारी के घर मँ वोलाय,
नाहीं हीन होये तन जरूर ववुआ।
सव केहू मिलि के कर दूर ववुआ।।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

नीम और तुलसी का उपयोग

चतुरमुनि वर्मा तथा साथी
स.बा.वि. मंदिर, जारी, प्रयाग
इलाहाबाद

नीम तुलसी के पेड़ वड़ा पावन। एनहा में गुण वावन ।।
एनहिं हम पूजी थ ।। टेक।।

नीम निमावट पातीं सींका।
खजु खसरा वुखार के टीका।।
जव घोरिनि घोरि पियएवइ। वहुत सुख पउवइ ।।
एनहिं हम पूजी थ ।। टेक।।

आंगन के तुलसी शोभा वढ़ावै।
सर्दी हरारत और खाँसी मिटावै।
गुड़, हर्दी और नमक मिलाई। पियव वलकाई ।।
एनहिं हम पूजी थ ।। टेक।।

तुलसी के लकड़ी की सुन्दर माला।
नीम के लकड़ी से कुछ वनवा ला।
निमकौरिउ से खाद वनउवइ। सोन उपजउवइ।।
एनहिं हम पूजी थ।। टेक।।

शीतल छाया से देहिया जुड़ानी।
एन्हइ उपजाये से सुख पाये प्रानी।।
एनकर गुण अपनउवइ। दवइया वनउवइ।।
एनहिं हम पूजी थ।। टेक।।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोक गीत

राधेश्याम पटेल तथा साथी
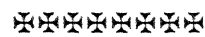
गंगा माई अमरित धारा, जिनि पवारा कचरा।।
मल-जल और कचरा वहै नाहि पावई
मुर्दा और मांस ओमां सड़ई न पावई
भइया कुछ त सोचि विचारा, जिनि पवारा कचरा।

न तउ मइला कपड़ा धोवा ना तउ मइला डाला।
गंदी आदत आपन-आपन सव केऊ यार सुधारा।।
साफ ई राखा भाई किनारा, जिन पवारा कचरा।

केतना जने गये करई मुखारी थूंकई खूव खंखारी
एतनई नांही जीभ छोलिके फेंकई जूठ मुखारी
केतना गंदा काम तुम्हारा, जिनि पवारा कचड़ा।।

केतना जन सुन कथा भागवत होम लिए गोलियाई।
सड़ा फूल सव आरती-बाती लाई के दिहेन वहाई।
भइया सन्त जी चाल सुधारा जिनि पवारा कचरा।

✠✠✠✠✠✠✠✠

अजय प्रकाश
ब्लाक न 14 फ्लैट नं. 12
शिव नगर कालोनी, एल आई जी
अल्लापुर, इलाहाबाद

पेड़

एक वार और पेड़ रोप रे वनमाली
जाने किस पेड में आम सी मिटास हो
पुरइन सी पात-पात
जियरा है गात-गात, जियरा में है उलास
मनवा में आस-पास
एक वार और पेड़ रोप रे वनमाली।
जाने किस पेड़ में फल की मिटास हो।।

फूलों का बाग है
मन में इक राग है
दुनिया में आग है,
एक वार और फूल रोप रे वनमाली।
जाने किस फूल में सुगंधों की चाह हो।।
एक वार और पेड़ रोप रे वनमाली।
जाने किस पेड़ में चंदन की वास हो।

नीम की छाँव है, पूरा ही गाँव है
अमवा का वौर है
कोयल की ठौर है
एक वार और पेड़ रोप रे वनमाली।
जाने किस पेड़ में जीवन की राह हो।।

✠✠✠✠✠✠✠✠✠

कजरी

शिव नरेश "सुगना"
[illegible] जारी, इलाहाबाद

भइया हिल मिल विरछा लगाइ द प्रदूषण भगाइ द ना ।। टेक
जब तक विरछा न लगउब, शुद्ध हवा नाही पउब।
सोवत धरती के सपना जगाइ द प्रदूषण भगाइ द ना।।

मिले शुद्ध हवा पानी, बने सब के जिन्दगानी
विरिछवा से गउँआ सजाइ द, प्रदूषण भगाइ द ना।।

पौधे धरा के सिंगार, जिससे जीवे जीव हजार।
आपन पर्यावरण शुद्ध बनाइ द, प्रदूषण भगाइ द ना।।
वृक्ष कोई भी लगाना, उसको हरा न कटाना।।
घरवा बेला चमेली से सजाइ द, प्रदूषण भगाइ द ना।।

आम नीबू औ अनार, फल देते रसदार।
''सुगना'' सबही से बतिया बताइ द, प्रदूषण भगाइ द ना ।।

✠✠✠✠✠✠✠✠

लाचारी

राजेन्द्र प्रसाद यादव
ग्राम-[illegible] पो. सोरांव
[illegible]

साफ घरवा दुवरवा अँगन होई
रोग रहिव्या न चोला मगन होई।।
साफ सफाई है जिन्दगी के नितिया
कइल्या भइया ग्रामवासी प्रितिया
छूटी विमारी जतन होई। रोगी रहिव्या.

शौच वाद राखी या सावुन से धोवा हथवा
ढका स्वच्छ पानी पिया, रोग छोड़ सथवा
अपना जीवन में फूला-चमन होई। रोगी रहिव्या.

वदल वदल भूसी रोज धोवा वर्तनवा
कूड़ा कचरा साफ से सुहावन घर अगनवाँ
रहिवा निर्मल दुखवा पतन होई। रोगी रहिव्या.

कुआँ में पानी गन्दा, छोड़िला दवइया
स्वच्छ जीवन कइल्या भइया वनि जा मनइया
ऐसी रहनी से चैन-अमन होई। रोगी रहिव्या.

✠✠✠✠✠✠✠✠

लोकगीत

रामजतन प्रजापति

विज्ञान में दै दा योगदनवा सुना मोर भइया किसनवा।
द्वारे पे नीम, तुलसी लगावा अंगनवा, विज्ञान परिषद् का यही वा कहनवा
स्वच्छ जीवन करा घर अंगनवा, सुना मोर भइया किसनवा।।

प्राणी-प्राणी पेड़ लगावा धरती का अपने स्वर्ग वनावा
सुफल करा आपन ई जनमवा, सुना मोर भइया किसनवा।।
जनम-मरण पर्व जव व्याह रचावा
तेह अवसर पर पौधा लगावा
आरजे क इहईही वा अरमनवा, सुना मोर भइया किसनवा

✠✠✠✠✠✠✠✠

संकल्प गीत

पृथ्वी राज सिंह, अमित कुमार राय तथा अन्य साथी
18/84/60/1, तिलक नगर
अल्लापुर, इलाहाबाद

फैल रहा प्रदूषण है, सो रहा इंसान है,
कैसे बचेगी ये धरती न इसका अनुमान है,
जागो-जागो-४

कहते हैं जिसको हम श्रद्धा से गंगा मइया
उस मइया का आज हमने कर दिया हाल बेहाल
चीत्कार कर वह कह रही क्या कह रही-२
जागो-जागो-४

पल पल बढ़ता जाए ये धुँए का अंधकार
छटेगा कैसे ये बादल सुझाए कोई विचार
है है नहीं तो जागो जागो.......

काटा हमने पेड़ क्यों जो है जीवनदाता
आज अगर इसे न रोका कल बनेगा मृत्युदाता
आओ मिल संकल्प करें मिलकर गायें ये गीत
जागो जागो..........

✠✠✠✠✠✠✠✠

उजाले में अंधेरा

अभिमन्यु कुमार शर्मा
738, पुराना कटरा
इलाहाबाद

(चारों ओर की भीड़ के बीच एक मदारी और जमूरे का प्रवेश)

मदारी : हाँ तो साहेबान, मेहरबान, कद्रदान, थूकदान, पीकदान और जीनत अमान! हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े लिखे को फारसी क्या। ये खेल हमने बड़े-बड़े शहरों, गली-कूचों और महानगरों में दिखाया है तो बच्चा लोगों बजाओ ताली। (सब ताली बजाते हैं)

मदारी : हाँ तो जमूरे !

जमूरा : हाँ उस्ताद !

मदारी : देख आज इतने बाबू भइया लोग बैटे हैं। इन्हें आज तू कौन सा खेल दिखायेगा ?

जमूरा : उस्ताद ! देख बहुत हो चुका खेल तमाशा ! आज मैं खेल नहीं दिखाऊँगा।

मदारी : क्यूँ, ये क्या कह रहा है? पिटवायेगा क्या ?

जमूरा : उस्ताद ! चाहे जो हो जाये मैं खेल नहीं दिखाऊँगा।

मदारी : अरे जमूरे ! मेहरबानी के लिए आज का खेल दिखा दे। फिर कल से खेल बंद।

जमूरा : कल वल नहीं, आज से ही खेल बंद।

मदारी : ऐसा मत कह जमूरे ! मेरी नाक कट जायेगी। चारो ओर थू थू होगी कि मदारी का जमूरा नाकचढ़ा है।

जमूरा : ऐसा !

मदारी : हाँ, ऐसा !

जमूरा : तो टीक है ! चल, एक बीड़ी पिला। फिर खेल करता हूँ शुरू।

मदारी : क्या इस उम्र में बीड़ी ! ये बुरी लत तुझे कब से पड़ गई ?

जमूरा : कहाँ बुरी उस्ताद ! ये तो बड़े काम की चीज है। इसके पीते ही शरीर में बड़ी फुर्ती आ जाती है। काम तेजी से होने लगता है, दिमाग खुल जाता है।

मदारी : अरे नहीं ! ये सब गलत बातें हैं। गाँव के डाक्टर बाबू बताते हैं कि इसको पीने से साँस की बीमारी- जैसे दमा और टी.बी. हो जाती है। कैंसर जैसी भयानक बीमारियाँ जकड़ लेती हैं।

जमूरा : अच्छा !!

मदारी : हाँ ! और तो और तू अपने साथ साथ मुझे भी जबरदस्ती बीड़ी पिलाता रहता है।

जमूरा : क्या तू तो पीता नहीं ? फिर कैसे ?

मदारी : वो ऐसे कि जो तू पीता है उसका धुआँ आसपास फैलता है और साँस के साथ बगल वाले इंसान के भीतर भी चला जाता है।

जमूरा : क्या ? तब तो मैं अभी से बीड़ी पीना छोड़ता हूँ। मुझे इतनी जल्दी बीमार होकर नहीं मरना। चल खेल दिखायें, पर कौन सा खेल दिखाएँ ?

मदारी : वही सांप वाला खेल, जिसे हमने भयानक जंगल से पकड़ा था।

जमूरा : उस्ताद ! वो तो बड़ा खतरनाक खेल है। साँप ने किसी को काट लिया तो ? नहीं नहीं, ये खेल नहीं दिखाएँगे।

मदारी : अरे ! दिखा तो, और कुछ होगा तो मैं हूँ ही न। मेरे पास ऐसे ऐसे मंतर हैं कि सांप का जहर छूमंतर हो जायेगा।

जमूरा : तो ठीक है। पर जो भी होगा उसकी जिम्मेदारी तेरी।

(मदारी डमरू बजाता है जमूरा साँप की पोटली लाता है)

मदारी : हाँ तो साहेबान! ये साँप है पदम। काट ले तो चलो न एक कदम ! एक बार राजा परीक्षित को काटा था सात पुश्त गंजी पैदा हुई। ऐ बाबू ! बँधा हाथ खोल दें। हँस मत हँस मत। काट लेगा तो कहेगा कि मदारी।

जमूरा : बड़ा वो है।

मदारी : जमूरे !

जमूरा : हाँ उस्ताद!

मदारी : ला, तेरी जितनी उँगलियाँ हैं न इस पोटली में डाल दे।

जमूरा : हाँ, उँगलिया तेरे बाप की हैं जो डाल दूँ।

मदारी : अरे उगलियाँ तेरे बाप की हों या मेरे, उगलियाँ तो हैं न ला डाल दे।

जमूरा : नहीं उस्ताद ! काट लेगा।

मदारी : अरे नहीं काटेगा। ला डाल दे, डाल दे, डाल दे।

(जमूरा पोटली में हाथ डालता है। उसे साँप काट लेता है, जमूरा बेहोश होकर गिर पड़ता है)

ओफ हो ! जमूरे को साँप ने काट लिया। कोई बात नहीं। अभी मंत्र से जहर उतारता हूँ।

(मदारी मंत्र पढ़कर जहर उतारने की कोशिश करता है पर जमूरे की हालत बिगड़ती जाती है। मदारी परेशान हो जाता है। तभी भीड़ से एक डॉक्टर निकलता है)

डॉक्टर : क्या हो रहा है यहाँ?ये क्या हो गया है? क्या कर रहे हो इस बच्चे के साथ

मदारी : देखिये आप हमारे काम में टाँग मत अड़ाइए। इसको खतरनाक साँप ने काट

लिया है, मैं इसका जहर उतार रहा हूँ।

डॉक्टर: क्या ? साँप ने काटा है ?

(डॉक्टर तुरंत मदारी को किनारे हटाकर जमूरे के पास जाता है)

डॉक्टर: बेवकूफ ! इसको जहर चढ़ रहा है और तुम ये ऊटपटाँग हरकतें कर रहे हो, लाओ अपना गमछा दो।

(डाक्टर गमछा लेकर उसके हाथ पर कस के बाँध देता है)

डॉक्टर: कोई तेज ब्लेड है तुम्हारे पास ?

मदारी: हाँ है।

डॉक्टर: लाओ दो। (डॉक्टर ब्लेड से उसकी उँगली पर चीरा लगाकर खून बाहर निकालता है, मुँह से खींचता है। थोड़ी देर बाद)

डॉक्टर: अब इसे तुरन्त अस्पताल ले जाओ।

(मदारी और जमूरे को लेकर अस्पताल जाते हैं)

डॉक्टर: (दर्शकों से) यहाँ एक बच्चे की जान जा रही थी और आप लोग तमाशा देख रहे थे। साँप का जहर झाड़-फूंक से नहीं, इलाज करने से उतरता है। थोड़ी देर अगर ऐसा ही चलता रहता तो उस बच्चे की जान चली जाती। आप लोग ऐसे ही अंधविश्वासों में जकड़े हैं। ओझा सोखा से बीमारियों का इलाज करवाने जाते हैं। बीमारी तो दवा से खत्म होती है, बीमारी तो गंदगी से पैदा होती है, उसमें भूत-प्रेत जैसी काल्पनिक चीजें कहाँ से आ गयीं। फिर उसे अस्पताल भेजो। इसी तरह हर रोग और बीमारी का प्राथमिक उपचार है जो घर से अस्पताल तक जाने से पूर्व किया जाता है। आप सब गाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर आकर इसकी जानकारी लें और अंधविश्वासों से बचें।

गीत

अज्ञानता का रण, करते हम प्रण हैं
अंधविश्वास को दूर करेंगे
जीवन का निश्चय दृढ़ है
चारों ओर खुशहाली हो
दूर सभी बीमारी हो
नहीं करेंगे धूम्रपान
प्रतिज्ञा आज हमारी हो
स्वास्थ्य केन्द्र है खुला
करता रोगी को भला
ओझा सोखा के चंगुल में
पड़े नहीं तो हो भला

नाटक

बूढ़े किसान का अन्ध विश्वास

सुभाष चन्द्र मिश्र
पचदवरा, अटरामपुर
इलाहाबाद

(एक गाँव की कहानी है जो एक बूढ़े किसान, उसकी औरत व दो जवान बेटों व डॉक्टर पर आधारित है । किसान अन्धविश्वास को मानने वाला व पूजा पाठ पर विश्वास करने वाला था और उसके दोनों बेटे बिल्कुल उससे अलग । वे आज के वैज्ञानिक दौर में पढ़े लिखे और वैज्ञानिक विचारों को मानने वाले शहर में इलाज कराने के लिए विचार व्यक्त कर रहे थे कि इतने में किसान को कुछ बातें सुनाई पड़ीं । वह अपने बच्चो से बोला) ।

दृश्य-१ (पर्दा उठता है । किसान चारपाई पर लेटा है)

किसान : का हो ! का बतकहीं चल रही बा ।

लड़के : कुछ नाहीं बाबू ! इहै तोहरे बिमारी के इलाज करावै खातिर हम सब सोचित थन शहर चला जाय, बड़ी अस्पताल मा आपना को बढ़िया इलाज कराई ।

किसान : हमका का हुआ बा ! जौन कहव तू लोग का ओका तौ मनवा ना । दूसरे शहर मा हमका लै जाय के लोहा कोचाय-कोचाय मारय का विचार है का ? हम एतना भारी लगी थी ?

लड़का : अरे बाबू ! इ काहे ऐसे सोच थौ । का हम लोग तोहार दुश्मन हैं का । अरे ! आज घास-फूस खाय का जमाना नाहीं रहा ना । इ वैज्ञानिक युग बा । कोई रोग से जल्दी कोई मरत है । इ केवल आप पुराने लोगन की समझ की बात है ।

किसान : चलौ-चलौ, हमका पता है तुम्हरे जैसे पढ़न लोगन का और तुम्हरे बिगड़न जमाना का हमारे, उ कहत रहे की नाती तुम्हारे सब के बुढ़ात तक धरम-करम सब धीरे-धीरे लोप होई जाई और तुम लोग का औलाद जो हो ईहै भगवान का देखई खातिर उनके घरे तक उड़य का मन करैहै । तब जान्यौ नाती कि घोर कलयुग आइ गवा ।

लड़का : अरे नाहीं बाबू ! ऐसन काहे सोचत हो । जैसे जैसे विज्ञान तरक्की करत बा वोइसन-वोइसन हर काम करय का ताकत बढ़त बा । ये सब बाबू विज्ञान की देन है । चला जल्दी से तैयार होई जा । चलीं ।

किसान की औरत : काहे हो तुम लड़िकन का बात नहीं मनतेव, अगर ऐसेन करय का रहा तौ लड़िकन का खर्चा वर्चा करिके चार अक्षर पढ़ावै-लिखावै कहते रहेव । अच्छा मनई बनाऊव इहैय एकै मतलब है । आखिर लड़िकन हम तुम गँवारन से बुद्धिमान तो होवै करिहैं, पढ़े लिखे हैं । इनकै बात मानो और जल्दी से शहर चलौ ।

किसान : आखिर बेटवन के चक्कर मा तुमहू बोलय लागिव भागमान ! चलौ, जैसी राम जी की इच्छा । सायद

इहै बहाने शहर मा मरै का लिखा होय । चलौ भइया ।

लड़के : (दोनों एक स्वर में) काहे लिए बाबू ऐसन सोचत हो । आज विज्ञान इतना ज्यादा तरक्की करत वा कि लोग चाँद पा मनई बसावइ खातिर हुआँ जाय के हवा पानी खोजत वा । तू यह तरह सोचत बाट्या ।

(किसान हँसता हुआ दोनों लड़कों के कन्धों पर हाथ रखे बस अड्डे की ओर जाता है)
पर्दा गिर जाता है

दृश्य-२ (पर्दा उठता है । किसान को बच्चे शहर के अस्पताल में लेकर पहुँच जाते हैं ।
डाक्टर के पास बच्चों का ठहरना ।)

लड़के : डॉक्टर बाबू !जै राम जी की ।

डाक्टर : जै राम ! जै राम! आओ बैठो ।

(किसान समेत दोनों लड़के बैठते हैं । तब डॉक्टर फिर पूछता है)

डाक्टर : कहैं बाबा क्या हुआ ?

किसान : का बताई डॉक्टर बाबू ! शरीर तपती वा । कुछ स्वास तेज चलत वा । काढ़ा वगैरह पियत रहे लेकिन लड़िकन नाहीं माने । कहिन शहर चलो । हम कहा, चलो इहौ देख लेई ।

डॉक्टर : ठीक किए बाबा ! लेकिन देर कर दिये । तुम्हारी कुछ जरूरी जाँच करनी पड़ेगी ।

किसान : उ कैसेन साहेब ?

डाक्टर : कुछ हल्का ऐसे बलगम व खून की जाँच होगा और ऐक्सरे करेंगे । फिर उसके बाद इलाज करेंगे । कुछ समय जरूर लगेगा । आपको रुकना भी पड़ सकता है ।

किसान : उ का होता है साहेब ! कैसेन होत है ? का हमार खून सब निकार के छानबो आप ? और बलगम खीचबो साहेब !

डॉक्टर : (हँसते हुए) नहीं बाबा । नहीं ऐसा कुछ नहीं । (लड़कों की ओर फिर कर) आप दोनों लोग पढ़े हो । क्या हमारी बातों को समझ रहे हो ?

लड़के : जी हाँ डाक्टर साहब ! अभी बाबू को समझाइथ । आप जाँच वगैरह करवायें ।

(पर्दा गिरता है । जाँच के लिए गये किसान से उसके लड़के बातें समझाते हैं ।)

दृश्य-३ प्रारम्भ
अधूरा होने के लिए खेद है

✠✠✠✠✠✠✠✠

पात्र
किसान
राजू
डॉक्टर

काली – छाया

राजेश कुमार पुत्र ब्रजलाल
108 फतेहपुर बिछवा, हाशिम पुर रोड,
इलाहाबाद

(एक गाँव का एक किसान होता है । गाँव में बड़ी प्रसन्नता से अपने परिवार के साथ रहता है । उसका गाँव बहुत सुन्दर था । गाँव के चारों तरफ खुला वातावरण होता है और हर तरफ हरियालियाँ होती हैं । किसान एक दिन अपने पोते के साथ गाँव में घूमने निकलता है)

किसान : राजू ! देखो कितने सुन्दर पेड़ हैं, इनमें फल भी लगे हैं । और वो देखो ! कितने रंग-बिरगें फूल हैं, कितनी अच्छी सुगंध आ रही है ।

राजू : हाँ, दादा जी !

किसान : तुम्हें मालूम है, मैं अपने बचपन में बहुत फल खाया करता था और हमारे गाँव की शुद्ध हवा और पानी हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है ।

राजू : तब तो मैं भी रोज फल खाया करूँगा और अपना स्वास्थ्य बनाऊँगा ।

किसान : हाँ बेटा राजू ! तुम्हें मालूम है स्वास्थ्य अच्छा रखना जीवन में बहुत उपयोगी है ।

राजू : पर दादा जी ! ये फल, पेड़, पानी कहाँ से आते हैं ?

किसान : बेटा ये तो हमें प्रकृति देती है । इसकी देखभाल करना हम सबका कर्तव्य होता है ।

राजू : वो कैसे दादा जी ?

किसान : जैसे हर व्यक्ति रोज एक पेड़ लगाए, और पेंड़ों को काटने से बचाये । ये हमारा कर्तव्य है । इससे हमारा गाँव तथा देश हरा-भरा रहेगा, और गाँव की तरह शहर में भी हरियाली रहेगी तथा वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ होगा क्योंकि स्वस्थ शरीर ही सबसे बड़ा धन है ।

फेड आउट

(एक दिन यह किसान अपने पोते के साथ शहर में मित्र से मिलने आता है और उसे अचानक खाँसी आने लगती है । उसका खाँसी से बुरा हाल हो जाता है ।वैसे ही पौत्र राजू उससे पूछता है)

राजू: दादा जी ! आपको अचानक खाँसी कैसे आने लगी ? अभी तो आप बिल्कुल ठीक थे । समझ में नहीं आता क्या है ? खाँसी तो रुकने का नाम ही नहीं लेती । चलो किसी डॉक्टर के पास चलते हैं ।

फेड आउट

(किसान और राजू डॉक्टर से मिलने जाते हैं। सारी जाँच के बाद पता चलता है यह खाँसी वायु प्रदूषण की वजह से हुई है)

डाक्टर: शहर में ही बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ और कारखाने होते हैं जो कि डीजल से चलते हैं और पेट्रोल से चलने वाली होती हैं, स्कूटर, मोटरकार, बस, ट्रक इत्यादि और इन सबसे धुआँ निकलता है। धुआँ और धूल से भरे स्थान में कार्बन डाई ऑक्साइड गैस अधिक होती है। इससे वायु में उपस्थित गैसों का अनुपात कम हो जाता है और वायु प्रदूषित हो जाती है।

राजू: वायु प्रदूषण कैसे रोका जा सकता है ?

किसान: बेटा अगर। गाड़ी की समय-समय पर देख भाल करें, और करायें तथा फैक्ट्री और कारखानों में कुछ ऐसे यंत्र लगाये जायँ जिनसे वायु को प्रदूषण होने से बचाया जा सके।

✠✠✠✠✠✠✠✠

नाटक

सुनील कृष्ण
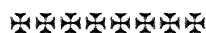
पालीथीन (पन्नी) और पेड़

पात्र – रामू, काका, सीता, शिक्षक, अधिकारी, सानू

दृश्य १

रामू : अरे ! ओ......... रामराज काका ! आपके पास खुरपा है ?

काका : पागल हो गये हो क्या ? पीठ पर स्कूल का झोला और जुबान में खुरपा का नाम ।

रामू : काका बात यह है कि आज स्कूल में जंगल विभाग और वायु पर्यावरण अधिकारी आयेंगे । दोपहर के बाद बच्चों से स्कूल के किनारे पेड़ लगवायेंगे ।

काका : तुम्हारे स्कूल में कितने लड़के हैं ? बेटा !

रामू : काका ! करीब-करीब चार सौ लड़के ।

काका : बेटा ! खुरपा घर ले आकर वापस करना और हाँ, एक पन्नी (पार्लाथिन) गोबर की खाद लेते जाओ । अपने पौधे में खाद डाल कर पानी जरूर दे देना ।

रामू : अरे ! काका गोबर की खाद तो मैं लें जाऊँगा पर पन्नी में नहीं । पन्नी हम सभी की दुश्मन है ।

काका : कैसे बेटा ?

रामू : काका ! मुझे स्कूल के लिए देर हो रही, परन्तु मैं थोड़ा सा तुम्हें बताता हूँ । काका ! जहाँ पर पन्नी खेत में पड़ जायेगी वहाँ पर अनाज के पौधे नहीं उगेंगे । पन्नी अगर दस पेड़ के लिए रुकावट बनती है तो एक वर्ष के हिसाब से ३६५ दिन में ३६५० पेड़ के नुकसान के लिए आप प्रत्येक दिन एक-एक कर पन्नी में बाजार से सामान खरीद कर लाते हैं । अच्छा काका ! मैं चलता हूँ । शाम को बातें करूँगा ।

काका : (जोर आवाज से) तुम आम का पेड़ लगाना अच्छा

दृश्य २ (रामू का विद्यालय, समय-दोपहर के बाद का)

अधिकारी : अच्छा बच्चों ! सभी लोग अपना-अपना पेड़ लेकर गड्ढों में रखो और गड्ढों में कीड़ा मारने वाली दवा जरूर डाल देना ।सभी लोग दवा बाँये हाथ से छुएँगें ।

शिक्षक : रामू ! तुम कौन से फल का वृक्ष लगा रहे हो ?

रामू : जी ! आम और नीम का । एक से फल और दूसरे से शुद्ध शीतल हवा ।

शिक्षक : तुमको कैसे पता कि नीम से शुद्ध और शीतल हवा मिलती है ?

रामू : मेरे काका बताया करते हैं ।

दृश्य ३ (रामू गाँव आता है और शाम को काका और परिवार वालों से बातें करता है)

सीता : भैया ! आज काका से खुरपा क्यों माँग कर ले गया था ?

रामू : अरे ! मेरे स्कूल में मेरे हाथ का लगाया हुआ एक पौधा आम का होगा और दूसरा नीम का । कुछ वर्षों बाद फल और छाया दोनों मिलेगी ।

सीता : परन्तु तब तक तो स्कूल से ऊँची कक्षा के लिए दूसरे स्कूल में चले जाओगे तो आम कौन खायेगा ?

रामू : अरी पगली ! तुम्हारा भैया नहीं खायेगा तो भतीजा तो खायेगा !
(सभी जोर से हँस पड़ते हैं)

काका : आज मैं भी एक पेड़ अपने नाम से खेत में लगा कर आया हूँ । कौन जाने क्या हो कल ?

सीता : भैया पेड लगायेगा, तो भतीजा फल खायेगा ?

काका : रामू ! अब बताओ पन्नी से कौन-कौन नुकसान हैं ?

रामू : काका ! दुनिया की कुछ चीजें ऐसी हैं जिनको हमें प्रयोग नहीं करना चाहिए । उनमें से एक पन्नी भी है ।

काका : बक बक मत कर ! सीधे-सीधे पन्नी से नुकसान कैसे होता है यह बता ।

रामू : पन्नी न तो सड़ती है, न गलती है । पन्नी में सामान लाते हैं और पन्नी घर से बाहर खेतों में जाने के लिए फेंक देते हैं ।

काका : हे भगवान ! यह तो सच है कि यह न सड़ती है और न गलती है । और बताओ बेटा !

रामू : काका ! इसको अगर कूड़े में मिला कर जला देते हैं तो इससे गन्दी गैस निकलती है जो सभी जीव जगत के लिए नुकसानदायक होती है जिससे फेफड़े की बीमारी हो सकती है ।

काका : अच्छा यह बताओ पन्नी कहाँ फेकना चाहिए ?

रामू : अरे काका ! आप पन्नी में सामान लेने के बजाय झोले या कागज के थैले में सामान लायें । बस ! फेंकने की झंझट खतम ।

काका : हाँ, इससे हमारे गरीब भाइयों के यहाँ कागज की थैली का छोटा गृह उद्योग भी लग सकता है ।

रामू : अब लगता है कि आपकी समझ में कुछ आ रहा है !

काका : पन्नी में अगर कुछ फल या सब्जी के छिलके फेंक दें तो गाय या भैंस छिलके की लालच में पन्नी भी खा जायेंगी और पन्नी पेट में न गलने के कारण यह जानवर मर भी सकता है ।

रामू : हाँ काका ! अब आप ठीक समझ गये और कल से झोले में सामान लायेंगे ।पन्नी में नहीं ।

रामू और काका: पन्नी दूर भगाओ । समस्याओं से बच जाओ ।

दृश्य-४

रामू: (खुद से बातें करता हुआ) आज मेरे पास नौकरी है, बीबी है और छोटा सा सुन्दर मकान । अगर रामू काका होते तो कितना अच्छा होता ?
(अचानक पतली सी आवाज आती है)

सोनू: (हाथ पकड़ कर) पापा ! पापा ! चिड़िया का बच्चा रो रहा है । काका वाले पेड़ के पास चलिये उसे घर लाइये ना ।

रामू : चलो ! राजा बेटा (दोनों जाते हैं)

सोनू : पापा इसे घर ले चलो न ।

रामू : नहीं, बेटा ! देखो पेड़ पर इस बच्चे की माँ रो रही है । इसे मैं इसके घर पहुँचाता हूँ । (वह पेड़ पर चढ़कर बच्चे को उसके घोसलें मे रखकर वापस आता है ।)

सोनू : पापा ! पापा ! बच्चे की माँ चुप हो गई न !

रामू : हाँ, बेटा ! उसका बच्चा जा मिल गया ।

सोनू : पापा मैं भी पेड़ लगाऊँगा और चिड़िया अपना घर पेड़ में बनायेंगी ।

✠✠✠✠✠✠✠✠

प्रहसन

आपन सोच सफलता ओर, जेकर कउनउ ओर न छोर

पात्र परिचय — *त्रिभुवन नाथ पटेल*

चन्दन– एक ग्रामीण शिक्षित किसान
त्रिलोकी– एक ग्रामीण शराबी किसान

चन्दनः (समाचारपत्र पढ़ते समय)
वाह भाई ! वाह !! ई पन्नी, ई अन्धविश्वास, ई पर्यावरण प्रदूषण ! हमारे समाज के आफत में करे बा अउर एका दूर करइ खातिर विज्ञान परिषद् अउर सेवा फाउण्डेशन कितना वढ़िया माध्यम वनाये बा ।
(तभी शरावी त्रिलोकी आता है)
का हा भइया तिरलोकी ! आज तूँ जल्दी आइ गय, जय राम जी की ।

तिरलोकीः अरे कुछ नाहीं । हमका चलइ द । वहुत चढ़ी है सम्मइ चढ़ी है ।

चन्दनः अरे भइया ! आव, आज हम बहुत बढ़िया खवर वताई ।

तिरलोकीः अरे तुम क्या वताओगे ? हम सव जानते हैं । हम घर से शहर वाजार तक घूमते रहते हैं ।हमसे ज्यादा तुम क्या जानोगे ।

चन्दनः नाहीं भइया ! सरकार एक वहुत बढ़िया जानकारी वताये बा । ओसे हम आपन सुरक्षा बहुत बढ़िया कइ सकित है ।

तिरलोकीः अरे सरकार हमका का वताये । हम त आपन कमाई खाइत है । सरकार का हमका गोहूँ चाउर तौलति बा ?

चन्दनः (शरावी के हाथ में तमाम पन्नी देख कर)
अरे भइया ! एतनी ढेर के पन्नी ! ई सव का लेहे हय हो !

तिरलोकीः (हँसिके) हे हे हे ! देखत नाहीं हय, हम का लहे हय हई ! यह में चाउर, यह में मिर्चा, यह में आलू, यह में आटा, यह में भाँटा..।

चन्दनः राम-राम ! बताव एतनी पन्नी का करबा, कहाँ फेंकवा ? जानथ ई पन्नी केतना नकसान करत है ? इलाहाबाद शहर में अल्लापुर बा न-? ऊ इही पन्नियइ के कारन बूड़ि गवा रहा । जवन पानी निकरइ वाला पम्प रहत ह न वह में ई पन्नी ढेर क फंसि गई रहीं । पानी नही निकरि पायेस अउर पूरा मोहल्ला बुड़ि गवा रहा । तुहूँ आपन गाँव बोरइ के चक्कर में परा हय ?

तिरलोकीः का कह ? हमार गाँव कैसे बूड़े ? जब बुड़इ लागे तव अपने धाने में खोलि देव, बहि जाये ।

चन्दनः नहीं भइया ! ई वहुत नकसान करत ह । ई तोहर जउन खेत में पड़ि जाये उ न सड़े, न गले। अइसइ परी रहे वह जघे, कउनउ पउधा न जामे । अउर घरे दुवारे फेंकि देवा तउ बहुत कचरा होइ जाये । जवन गाइ खाइ लेइहीं ओनके रोग होइ जाये । अगर एका जलउबय त जवन गैस निकरे उहूँ से मनई मरि जइहीं । अब समझ केतना नकसान करथ ! इही के मारा भइया तोहका

समझावत हइ कि कउनउ पुरान-धुरान कपड़ा होइ त उहीं क एक झोला वनवाइ ल्य । चाहीं जेतना
समान खरीदि के भरि ल्य आराम से ।

तिरलोकी: नाहीं भइया, नाहीं । हम आपन गाइ न मारव । अव हम ई घरे न लइ जाव । (अपनी रुमाल में रखत है । तवई पुड़िया देखि के चन्दन कहत ह)

चन्दन: अरे भइया ! ई का अहै ? कउनउ मसाला अहै का ?

तिरलोकी: नाहीं । मसाला न होई । ई लौंग अहै । हमरे सतई नम्बर वाली जवान बिटियवा बा न, उहीं के भूत लागे वा । मैकू ओझा बतायेन ह उहीं खातिर ई लौंग लेहे हई । उन्हीं के खातिर आज चार दिना से परेशान हई ।

चन्दन: भइया ! आज केतना दिन से तोह समझावत हई कि अब लड़िका न होवा मगर तोहरे समझ में नहीं आवत बा । तू परेशान होव । तोहका कइयौ वार समझावा कि जेसरा बलाक में जाइ के कउनऊ डॉकटर से चाहीं नर्स से राय लइके गोली खाइ के लइल्य, चाहीं कन्डोम लइल्य । अच्छा, चल आज हम तोहका दियाइ देई । अउर जवन कहत हय कि बिटिया के लइ चल जसरा ब्लाक में कउनउ डॉक्टर के देखाइ के दवाई लइल ।

तिरलोकी: नाहीं, मैकू ओझा कहेस कि बिटिया के भूत लाग बा । ओकर काली माई खुदइ बताएस ह ।

चनदन: अरे भइया ! ऊ काली माई के चक्कर छोड़ि द । ओझा के न बोलाव । पहिले तू आपन महुआ माई के सम्हार । जवान भहरात हय, अबहीं सीधा तू कउनउ टरक के नीचे न चला जा । भइया ई जवन बीड़ी अउर दारू पियत हय ई त छोड़ि द । नाहीं तोहरे टी.बी. होइ जाये त बहुत जल्दियइ मरि जाव ।

तिरलोकी: (रोकर) का ? हम मरि जाब ? हमरे टी.बी. होइ जाये ? हम मरि जाव ? हमार लड़िका का करिहीं ? भइया आज से हम न पियबै, न केहू के पियइ देव । हम सवके समझाइ देव ।

गाना: आपन सोंच सफलता और जेकर कउन ओर न छोर
ओकर दारू उतरी भोर अब तउ चल चली घर ओर ।

✠✠✠✠✠✠✠✠

आंखों का भूत

शिवमान सिंह
ग्राम – मितौरी, पो. जसरा
इलाहाबाद

पात्र परिचय
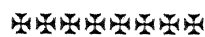
गुडिया– रतौंधी से ग्रस्त
छोटू– किसान का बेटा
माँ– गुडिया की माँ
पिता– गुड़िया का पिता

दृश्य-१ (छोटू और गुड़िया सगे भाई-बहन अपने माता-पिता के साथ खेत से शाम घर लौटते हैं। अचानक गुड़िया रास्ते में गिर पड़ती है और रोने लगती है।)

माँ : गुड़िया ! तुम कल शाम को गिर पड़ी थी, आज भी गिर पड़ी। रास्ता ठीक से देख कर चला करो।
गुड़िया : अम्मा मुझे तो ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है।
माँ : क्या दिखाई नहीं दे रहा है ? तुम्हें क्या हो गया है ? अभी तो तुम्हारी उम्र मात्र १० वर्ष है। जरूर तुम्हें भूतप्रेत का चक्कर है।
पिता : तब तो गुड़िया को पीपल वाले ओझा के पास दिखाना पड़ेगा।

दृश्य -२ (सुबह माता-पिता गुड़िया को लेकर ओझा के पास दिखाने के लिए ले जाते हैं)

ओझा जी : (गुड़िया को देखते हैं) "जै काली माई की" । अरे इसे तो पहाड़ वाले जिंद लगे हैं। इसे झाड़ फूँक करना पड़ेगा। इसके लिए रुपयों-पैसों की जरूरत पड़ेगी।
पिता जी : (इतने में गुड़िया के पिता ओझा जी के पैर पर गिर पड़ते हैं)
हे ओझा जी ! जितना रुपया पैसा खर्च हो मगर हमारी गुड़िया के आँख का भूत उतार दीजिए। नहीं तो इसकी शादी नहीं होगी। हम बर्बाद हो जायेंगे।
ओझा जी : (अन्दर ही अन्दर प्रसन्न होते हैं) पूरे १०० रु० का खर्च है।

दृश्य-३ (गुड़िया के ऊपर झांड़फूँक का कोई असर नहीं पड़ता। सभी उदास हैं। अम्मा रो रही है)

माँ : इतना पैसा भी ओझा जी के पास खर्च किया फिर भी हमारी गुड़िया की आँख ठीक नहीं हुई। भगवान ! मैं क्या करूँ ! मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

दृश्य-४ (हफ्तों स्कूल न जाने के कारण गुड़िया के मास्टर जी गुड़िया के घर जाते हैं)

मास्टर जी : नमस्ते अम्मा जी !
माँ : नमस्ते मास्टर जी
मास्टर जी : गुड़िया स्कूल क्यों नहीं जा रही है ?
माँ : क्या बतायें मास्टर जी ! गुडिया की आँख से ठीक-ठीक दिखाई नहीं दे रहा है। पता नहीं इसे

क्या हो गया है । ओझा जी को दिखाया मगर कोई फायदा नहीं हुआ ।

मास्टर जी :(गुड़िया की आँख की जाँच करते हैं) गुड़िया को रतौंधी हो सकती है।

माँ : रतौंधी क्या होती है मास्टर जी ?

मास्टर जी: रतौंधी का मतलब रात को कम दिखाई देना या बिल्कुल न दिखाई देना । बच्चों को रतौंधी तब होती है जब उन्हें विटामिन 'ए' की कमी होती है।

माँ: विटामिन 'ए' क्या होता है मास्टर जी ?

मास्टर जी: विटामिन 'ए' खाने में एक पोषक तत्व होता है जिससे आँखें स्वस्थ तथा नजर तेज रहती है । क्या गुड़िया ठीक से खाती है ? दूध पीती है ?

माँ: हम गरीब लोग दूध कहाँ पी सकते हैं ?

मास्टर जी: तो फिर इसे हरे पत्तीदार सब्जियाँ, पपीता और पके आम देना चाहिए । ये सस्ती पड़ती हैं तथा इसे आप लोग घर पर भी उगा सकते हैं ।

माँ: क्या इन फलों एवं सब्जियों को खिलाने से गुड़िया की आँख ठीक हो जायेगी ?

मास्टर जी: अभी तो गुडिया को डाक्टर को दिखाना पड़ेगा । चलिए डॉक्टर शर्मा के पास चलते हैं जो कि आँख के विशेषज्ञ हैं ।

दृश्य-५ (माँ और मास्टर जी डॉक्टर साहब के पास जाते हैं)

मास्टर जी: नमस्ते डॉक्टर साहब !

डॉक्टर: नमस्ते मास्टर जी ! अरे इस बच्ची को क्या हो गया ?

मास्टर जी: डॉक्टर साहब यह हमारी शिष्या गुड़िया है जिसे पिछले कुछ दिनों से रात को दिखाई नहीं दे रहा है । डॉक्टर साहब हमें तो लगता है इसे रतौंधी हो गयी है ।

डॉक्टर: (डॉक्टर साहब गुड़िया की आँख की जाँच करते हैं) हाँ । इसे रतौंधी हो गयी है । मगर काफी दिन बाद आप लोग इसे दिखा रहे हैं । अभी तक कहाँ थे ?

माँ: क्या बतायें डॉक्टर साहब ! हम लोग भूतप्रेत के चक्कर में इतने दिन परेशान थे । मास्टर जी ने हम लोगों को इस रोग के बारे में बताया । नहीं तो हमारी गुड़िया की आँख की रोशनी ओझा जी के चक्कर में चली जाती ।

डॉक्टर: अच्छा हुआ, आपने गुड़िया को दिखा दिया, नहीं तो ओझा जी के चक्कर में गुड़िया की आँख की रोशनी जा सकती थी । हम कुछ दवा दे रहे हैं । इसको १५ दिन तक खिलायेंगे तो आँख ठीक हो जाएगी । हाँ, एक बात का ध्यान जरूर दीजिएगा । इसे हरी सब्जियाँ, पपीता तथा पके आम संतुलित मात्रा में देते रहियेगा ।

माँ: धन्यवाद डॉक्टर साहब !

(मास्टर जी, गुड़िया, माँ घर जाते हैं)

माँ: गुड़िया ! ये लो दवा खा लो और मैंने आज भोजन में हरी सब्जियाँ बनाई हैं । चलो खालो । धीरे-धीरे हमारी गुड़िया रानी की आँख ठीक हो जायेगी ।

(इस प्रकार डॉक्टर की दवा तथा सुझावों से गुड़िया की आँख ठीक हो जाती है।)

✠✠✠✠✠✠✠✠

एड्स जागरण

राजीव कुमार शुक्ल
331ए/5 पीली कोठी, नई बस्ती,
कीटगंज, इलाहाबाद
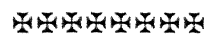
पात्र परिचय
अभिषेक– युवा एड्स रोगी
कीर्ति– एड्स रोगी की पत्नी
चन्दाबाई– कोठे की बाई
डॉ० परेश– डॉक्टर
रोहित– अभिषेक का मित्र
सुधीर– अभिषेक का पथभ्रष्ट मित्र

(दृश्य-१) गाँव -अभिषेक के माँ-बाप तथा २ बच्चे

अभिषेकः कीर्ति! मैं शहर की फैक्टरी में नौकरी करने जा रहा हूँ। तुम यहाँ माँ, बाबू जी और बच्चों का ख्याल रखना क्योंकि मेरे बाद उनकी देखभाल कौन करेगा। मैं समय-समय पर पैसे भेजता रहूँगा।

कीर्तिः (अपनी साड़ी के पल्लू से आँसू पोंछती हुई)
आप समय मिलते ही अवश्य आइयेगा और वहाँ जाकर हम लोगों को भूलियेगा नहीं।

दृश्य-२ (फैक्टरी के बाहर रोहित और अभिषेक मिलते हैं)

अभिषेकः अरे रोहित! तुम यहाँ!! और बताओ कैसे हो? (हाथ मिलाते हुए)

रोहितः और अभिषेक! तुम भी इसी फैक्टरी में काम करते हो! मैं तो ठीक हूँ लेकिन यह बताओ घर पर बाकी लोग कैसे हैं?

अभिषेकः घर पर सभी ठीक हैं।

(दोनों साथ-साथ चलते हैं। तभी रोहित अभिषेक को रोकता है और)

रोहितः वह है रेड लाइट एरिया! वहाँ कभी मत जाना।

अभिषेकः ठीक है मित्र! जानकारी के लिए धन्यवाद।

दृश्य-३ (फिर एक दिन)

अभिषेकः अरे सुधीर! तुम उस तरफ कहाँ जा रहे हो, वह तो रेड लाइट एरिया है जहाँ गन्दी औरतें रहती हैं।

सुधीरः अभी तुमने शहर की रंगीनियाँ देखी कहाँ हैं?
रेड लाइट एरिया नहीं, रंगीन एरिया है। वे गन्दी औरतें नहीं, परियाँ हैं। आओ मेरे साथ चलो।

सुधीरः (चन्दाबाई से) चंदाबाई! आज तुम्हारे लिए एक नया ग्राहक लाया हूँ। इसको खुश कर दो कि यह भी याद रखे।

चंदाबाईः जैसी हजूर की इच्छा।

(इसके बाद चंदा और अभिषेक एक कमरे में जाते हैं । उनमें सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।)

(कुछ समय पश्चात् सुधीर और अभिषेक चले जाते हैं ।४-५ महीनों के बाद अभिषेक गाँव आता है।)

दृश्य-४ (गाँव का दृश्य)

कीर्तिः आप आ गये ।
अभिषेकः हाँ! मैं आ गया ।

(घर पर कुछ दिनों पश्चात् ही अभिषेक छोटी-छोटी बीमारियों की चपेट में आने लगता है)।

कीर्तिः आप आजकल किसी न किसी बीमारी से जकड़े रहते हैं । भगवान के लिए आप खुद को डॉक्टर को दिखा दीजिए ।

दृश्य-५ (क्लीनिक का दृश्य)

अभिषेकः डॉक्टर साहब ! मैं आजकल किसी न किसी रोग की गिरफ्त में रहता हूँ जिससे मैं बहुत परेशान हूँ ।

डॉक्टरः (डॉक्टर आले से चेक करने के पश्चात्) आपके रक्त परीक्षण के पश्चात् ही सही-सही बीमारी का पता लगाया जा सकता है ।
(परीक्षण के पश्चात्) मुझे यह बताते हुए बहुत अफसोस है कि आप एच.आई.वी. + से संक्रमित हो चुके हैं जो कि बाद में एड्स का रूप ले लेता है ।

अभिषेकः डॉक्टर साहब ! ये रोग मुझे कैसे हो सकता है ?
डॉक्टरः आप उन तीन कारणों में से किसी एक कारण के शिकार हुए हैं ।
अभिषेकः कौन सी तीन वजहें हो सकती हैं ?
डॉक्टरः बताता हूँ -
पहला - आपने एच आई वी+ से संक्रमित सुई से इंजेक्षन लगवाया हो ।
दूसरा - आपको एच आई वी+ से संक्रमित रक्त चढ़ाया गया हो।
तीसरा - आपने एच आई वी+ से संक्रमित महिला से सम्बन्ध बनाया हो जो कि वेश्याओं में ज्यादातर पाया जाता है ।
अभिषेक : हाँ डॉक्टर साहब ! मैंने शहर में एक बार वेश्या महिला से संबंध बनाया था । (रोते हुए)
डॉक्टरः मैं तुम्हें कुछ दवायें देता हूँ जो तुम्हें फिलहाल आराम पहुँचायेंगी ।

दृश्य-६ (घर का दृश्य)

अभिषेक घर पर आता है और पत्नी से कुछ नहीं बताता है और इसी चिंता में घुलने लगता है ।

(फिर एक दिन)

कीर्तिः आप जब से डॉक्टर से मिल कर आये हैं, बहुत ज्यादा परेशान रहने लगे हैं । मुझे सही बताइये, डॉक्टर ने कौन सी बीमारी बतायी है ।

अभिषेकः नहीं-नहीं ! तुम चिन्ता क्यों कर रही हो । डॉक्टर ने कहा है मैं ठीक हो जाऊँगा (निराशा भरे स्वर में)

(कीर्ति को जब तसल्ली नहीं हुयी तो वह डॉक्टर से मिली)

कीर्ति: डॉक्टर साहब ! मेरे पति को क्या हुआ है ? वो दिन-रात चिंता में घुलते जा रहे हैं और मुझसे ठीक ढंग से बात भी नहीं करते ।

डॉक्टर: आपको जानकर दुःख होगा । लेकिन आप के पति एच.आई.वी + से संक्रमित हो चुके हैं जो बाद में एड्स का रूप धारण कर लेता है ।

कीर्ति: इसका कोई इलाज है ?

डॉक्टर: जी नहीं ! इसका कोई इलाज तो नहीं है लेकिन यह रोग समाज में और न फैले इसलिए मैं निवेदन करता हूँ कि आप लोग एड्स जागरण जन-जन तक पहुँचाएँ जिससे यह समाज में और न फैले । इससे पहले आपको हिदायत है कि आप भी इन चार कारणों को जान लें जिससे यह रोग फैलता है ।
पहला - आपने एच आई वी + से संक्रमित सुई से इंजेक्शन लगवाया हो ।
दूसरा - आपको एच आई वी+ से संक्रमित रक्त चढ़ाया गया हो।
तीसरा - किसी एच आई वी + से संक्रमित महिला या पुरुष से सम्बन्ध बनाने पर
इसको छोड़ कर चौथा कारण - एच.आई.वी + से संक्रमित माँ से उसके बच्चे को ।

कीर्ति: डॉक्टर साहब ! इससे बचा कैसे जाय ?

डॉक्टर: आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया । इससे बचने के कई उपाय हैं ।
पहला उपाय :- रक्त की जाँच के पश्चात् ही उसे चढ़वायें ।
दूसरा उपाय :- संक्रमणरहित सुई से इंजेक्शन लें ।
तीसरा :- संक्रमित पुरुष हमेशा कण्डोम का इस्तेमाल करें तथा संक्रमित स्त्री से सम्बन्ध के समय कण्डोम का इस्तेमाल करें । पति पत्नी के प्रति और पत्नी पति के प्रति वफादार रहें ।

कीर्ति : ठीक है डॉक्टर साहब ! मैं इन सब कारणों को गाँव वालों को बताऊँगी तथा इससे बचने के उपायों को भी बताऊँगी और अपने पति को एक नये लक्ष्य के लिए काम करने को कहूँगी ।

डॉक्टर : बहुत अच्छा । मुझे आपसे ऐसी ही आशा है ।

दृश्य-७ (अभिषेक और कीर्ति में बात होती है)

अभिषेक को इन सब बातों को जानकर बहुत हौसला आया और उन लोगों ने पूरे समाज को एड्स जागरण के प्रति प्रेरित करने का संकल्प लिया ।

दर्शकों की ओर इशारा करके सारे कारणों को बताते हैं तथा उपाय भी बताते हैं ।

गाते हुए (समूह गान)
रक्त न चढ़ाये-२ एच.आईवी. + से संक्रमित रक्त न चढ़ाये
इंजेक्शन न लगवाये-२, एच.आई.वी. से संक्रमित इंजेक्शन न लगायें
कण्डोम का इस्तेमाल पुरुष करें।

गांव में डॉक्टर का प्रवेश

पात्र परिचय

हरिया (35 वर्ष), डॉक्टर (40 वर्ष)
बूढ़ी माँ (70 वर्ष), लड़का (30 वर्ष)
बीवी (29 वर्ष)

अनन्त कुमार
16/110 ए. नयी बस्ती
सोहबतिया बाग, इलाहाबाद

हरिया : (डॉक्टर का पैर पकड़ कर) डॉक्टर बाबू ! मेरी बीवी को बचा लीजिए, नहीं तो वह मर जायेगी ।

डॉक्टर : अरे भाई क्या हुआ तुम्हारी बीवी को ?

हरिया : डाक्टर बाबू ! चक्कर आ रहा था लेकिन ठीक हो जाता था पर आज बेहोश होकर गिर पड़ी ।

डाक्टर : अच्छा चलो । (डाक्टर जाता है हरिया की बीवी बेहोश पड़ी है । घर में छः सात छोटे-छोटे बच्चे हैं और उसकी बूढ़ी माँ एक ओझा से झाड़-फूँक करवा रही है)
डॉक्टर को देख कर बूढ़ी माँ कहती है-

बूढ़ी माँ : अरे हरिया ! ये सफेद कोट वाला कौन है ? अरे ये जूता पहन कर अन्दर चला आ रहा है ।देख नहीं रहे हो, ओझा जी तेरी बीवी पर चढ़ा भूत उतार रहें हैं ।

डॉक्टर : अरे माता जी ! ये भूत-वूत क्या है ? अरे आदमी चाँद पर हो आया और आप हैं कि अंधविश्वास में फंसी हैं । माता जी ! ये बीमारी है । ओझा जी आप यहाँ से जायें । हमें इनका इलाज करने दें । हरिया तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?

हरिया : सात हैं साहब ।

डॉक्टर : सात बच्चे और अब तुम्हारी बीवी फिर गर्भवती है ?

हरिया : क्या करें साहब ये तो भगवान की देन है ।

डॉक्टर : अरे हरिया ! आज विज्ञान की वजह से लोग अंतरिक्ष पर रहने की बात करते हैं और तुम हो कि ! और फिर देश में जनसंख्या नियंत्रण पर इतनी योजनाएँ हैं । क्या तुम्हें इसके बारे में पता है ?

हरिया : नहीं, डॉक्टर बाबू ।

डॉक्टर : देखो, हमारे देश की आबादी एक अरब से ऊपर हो गयी । अब तुम भविष्य में बच्चे पैदा नहीं करोगे । इसके लिए तुम्हारे लिए सबसे अच्छा साधन कंडोम का इस्तेमाल करो जो हर जगह आसानी से मिलता है।

हरिया : डॉक्टर बाबू ! मेरी बीवी को खांसी भी बहुत आती है और हमारे बच्चे भी बहुत बीमार रहते हैं ।

डॉक्टर : अच्छा ये बताओ तुम्हारे यहाँ खाना कैसे बनता है ?

हरिया : यहीं आस-पास के पेड़ काटकर लाते हैं और उसी से खाना बनता है । हमारा एक पेड़ बचा था, बड़े भइया आज उसे भी काटने गये हैं । अब तो हमारे आस-पास एक भी पेड़ नहीं बचा, कुछ दिन बाद उसकी भी परेशानी ।

डॉक्टर : अरे हरिया ! मौत को बुलावा दे रहे हो तुम पेड़ काट कर । तुम्हें पता है पेड़ काटने से शहर का सारा प्रदूषण तुम्हारे गाँव को अपने आगोश में ले लेगा । अरे पेड़ से तुम्हें शुद्ध हवा मिलती है

जो तुम्हारे शरीर को स्वस्थ रखती है इसीलिए तुम्हारे सारे बच्चे व परिवार बीमार रहता है।

बूढ़ी माँ : डॉक्टर बाबू ! फिर घर में खाना काहे में बनेगा ?

डॉक्टर : अरे माता जी ! विज्ञान ने इसके लिए साधन बनाया है। आखिर गोबर आपके है ही। उससे आप गोबर गैस प्लांट लगवा सकती हैं या गैस चूल्हे का प्रयोग कर सकती हैं। इससे न तो धुंआ होगा न वातावरण प्रदूषित होगा और सबसे मजे की बात जल्दी कोई बीमार भी नहीं होगा।

बूढ़ी माँ : डॉक्टर बाबू ! हाँ ! आप हमारे मझले लड़के को देख लें उ शहर गवा रहा नौकरी खातिर लेकिन वहां से आवा है तब से बीमार है। कहत है चक्कर आवत है अउर शरीर में ताकत नहीं है। (डॉक्टर देखता है)

डॉक्टर : ओफ ओ ! माता जी अब बड़ी देर हो गयी इनके इलाज में (मझले लड़के से) तुम शहर कब गये थे ?

लड़का : एक दो साल पहले।

डॉक्टर : वहाँ क्या करते थे ? लगता है आप की संगत ठीक नहीं थी।

मझले लड़का : हाँ डॉक्टर साहब ! अब आप से क्या छिपायें। साहब ! वहाँ लड़कों के साथ शराब, सिगरेट पीना और ....

डॉक्टर : और बोलो। शरमाओ मत। बताओ इसी में तुम्हारी भलाई है।

लड़का : साब ! हम लोग कोठे पर भी जाते थे।

बूढ़ी माँ : अरे राम ! तू इतना बेशरम होय गवा।

डॉक्टर : अरे माँ जी ! बिगड़ने से कुछ नहीं होगा। इसे एड्स हो गया है। कभी भी एक से ज्यादा लोगों से शारीरिक संबंध नहीं बनानी चाहिए। नहीं तो ध्यान रहे एड्स जैसी बीमारी मौत ही बनकर आती है। एड्स से बचाओ। ऐसे करें कण्डोम का इस्तेमाल। दूसरे का खून लेने से पहले उसकी जाँच करवायें, इंजेक्शन लगवाने से पहले सुई को गरम पानी में उबाल कर लगवाएं।

हरिया : डॉक्टर बाबू का इसको देख कर के पता चल रहा है कि इसको एड्स हुआ है।

डाक्टर : नहीं, तुम्हारा भाई करीब एक दो महीने पहले एक लड़के को खून देने स्वास्थ्य केन्द्र आया था। इसके खून का जब परीक्षण किया तो उसमें एच.आई.वी. पाजिटिव पाया गया था, जो एड्स की बीमारी है। तुम्हारे भाई का खून उसे नहीं दिया गया। आज इसे देखा तो याद आ गया।

बूढ़ी माँ : डॉक्टर बाबू ! मेरे बच्चे को बचा लो।

डॉक्टर : देखिये, गलती तो इसने कर ही डाली लेकिन अब बताया है- एड्स के बारे में नहीं बचाव है और अब इसके बारे में सारे गाँव वालों को बताऊँ ताकि अब कोई घर परिवार बर्बाद न हो। हरिया तुम बताओ।

हरिया : देखिए, एड्स एक ऐसी बीमारी है जिसका दुनियाँ में कोई इलाज अभी तक नहीं खोजा जा सका है। सारी दुनिया के वैज्ञानिक इस बारे में प्रयत्न कर रहें हैं। इसलिए एड्स के रोगी का उपचार मृत्यु ही है। परन्तु इसको यह जानना जरूरी है कि ज्यादा लम्बा जीवन, लेकिन बिना उद्देश्य का हो तो, वह व्यर्थ होता है लेकिन यही दो दिन का जीवन समाज को कुछ देने में लगाया जाय तो व्यक्ति अमर हो जाता है। जैसा मैं भुगत रहा हूँ वैसा आप सब न भुगतें। ऐसी गलती कभी न करें।

✠✠✠✠✠✠✠✠

नाटक

साहब, बीवी, और विज्ञान
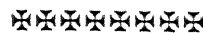
शिव आनन्द

पात्र परिचय

रमेश– पति
अनुराधा– पत्नी
लीलावती– मां
[illegible]– नौकर
ओझा
विजय– डॉक्टर

अनुराधा : अरे आ गये आप !

रमेशः अनुराधा ! जरा चाय पिलाना । बहुत थक गया हूँ । आज आफिस में बहुत काम था ।
(अनुराधा चाय बनाने के लिए अंदर जाती है)

अनुराधाः (अन्दर से) सुनोजी ! चाय के साथ कुछ और भी लेगें ।
(अनुराधा चाय लेकर अंदर आती है)

रमेशः (अनुराधा का हाथ देखते ही) अरे ये क्या इतना गंदा लगता है आज । आज फिर तुमने हाथ धोकर नाश्ता नहीं बनाया ? तुम्हें कितनी बार कहा है कि हाथ धोकर ही कुछ खाने-पीने की चीजें बनाया करो । और ये क्या तुम्हारे चप्पल कितने गंदे हैं ? और इसी चप्पल को तुम हर जगह पहन कर जाती होगी । क्यों ? देखो बाहर की पहनने की चप्पल अलग होती है और घर की अलग । और रोज कम से कम एक बार चप्पल को धोना चाहिए । अगर चप्पल गंदी होगी तो इससे रोग फैलेंगे, समझी !

अनुराधा : समझी

दृश्य-२

अनुराधाः (अपने नौकर से) भुलक्कड़ ! अरे ओ भुलक्कड़ ! कहाँ मर गया मुआँ ।

भुलक्कड़ः जी मालकिन आया ।

अनुराधाः अरे ! जा जरा बाजार से सरसों का तेल तो ले आ ।

भुलक्कड़ः अच्छा मालकिन (भुलक्कड़ तेल लेने बाजार चला जाता है)।

रमेश का प्रवेश

रमेशः अरे भाई ! क्यों चिल्ला रही ? थी क्या हुआ ?

अनुराधाः कुछ नहीं सरसों का तेल मंगवा रही थी ।

रमेशः अरे अभी तो एक सप्ताह पहले तुमने दो किलो सरसों का तेल मंगवाया था, सब खत्म हो गया ! तुमसे कितनी बार कहा कि इतनी तेल से बनी चीजें मत खाया करो, तबियत खराव हो जाएगी पर तुम भी...

अनुराधाः अजी कहाँ खाती हूँ ! वो तो कभी कभार । तुम भी बस कोई भी बात को लेकर लेक्चर झाड़ने लगते हो।

रमेश: अच्छा चलो आज छुट्टी का दिन है, तुम्हें कुछ पढ़ा दूँ ।
अनुराधा: न ओफो ! अब फिर हर संडे की तरह चटना पड़ेगा ।
रमेश: अच्छा चलो चलें । कापी, डाट पेन निकालो मैं तुम्हें हिन्दी का डिक्टेशन लिखवा दूँ। (किताव और कॉपी निकालते हुए) पिछली बार यहाँ तक हुआ था ना ! लिखो।
(अनुराधा लिखती है)
दिखाओ तो । ओफो फिर गलत !

(भुलक्कड का प्रवेश)

अनुराधः आ गये, ले आए तेल ?
भुलक्कड़: जी मालकिन ! ले आया ।पर इस बार तेल ४८ रु० किलो मिला । अच्छा मालकिन चलता हूँ । अभी कपड़े भी धोने हैं ।
अनुराधा: तुम नहा धो लो । मैं आज अच्छा नाश्ता और खाना वनाऊँगी । (जैसे ही अनुराधा जाने लगती है उसे चक्कर आता है और वह गिर पड़ती है । रमेश यह देखकर उसे पकड़ता है और कुर्सी पर बैटाता है और फिर डॉक्टर को फोन करता है)
रमेश: हैलो डॉक्टर साहब ! मेरी वीवी की तबियत बहुत खराव है । वो अचानक बेहोश हो गई है । आप जल्दी से मेरे घर पर आ जाइए । (रमेश फोन रखता है और अनुराधा के पास जाकर उसे होश में लाने की कोशिश करता है । पर अनुराधा होश में नहीं आती)

डॉक्टर का प्रवेश

डॉक्टर: अरे रमेश ! ये क्या हुआ ? कहाँ है अनुराधा ?
रमेश: अरे विजय ! देख न । पता नहीं क्या हुआ । अपने आप बेहोश हो गई । (डॉक्टर विजय चेक करता है और इन्जेक्शन देकर खुशी से रमेश से कहता है)
डॉक्टर: मुबारक हो ! तुम बाप बनने वाले हो ।
रमेश: (खुशी से) क्या मैं बाप बनने वाला हूँ ?
डॉक्टर: जी हाँ, तुम बाप बनने वाले हो । अच्छा तो मैं चलता हूँ । आप अनुराधा का खास ख्याल रखना । उसे ज्यादा कामकाज करने से मना करना और तली चटपटी चींजे तथा विषेश रूप से बाहर की चीजें खाने से मना करना । अच्छा नमस्ते ।
रमेश: नमस्ते डॉक्टर साहब !
रमेश: (अनुराधा से) सुना तुमने ! तुम माँ बनने वाली हो और मैं बाप ! अच्छा बताओ लड़का होगा या लड़की ? मैं कहता हूँ लड़की होगी क्या ?
अनुराधा: नहीं लड़का होगा । लड़का वंश चलाता है और देखना लड़का ही होगा ।
रमेश: खैर! जो भी हो होना स्वस्थ चाहिए । और अव अपनी सेहत पे ज्यादा ध्यान दो तथा चटपटी एवं तली चीजें खाना बंद कर दो । हरी सब्जी और ताजे फल खाया करो ।
अनुराधा: समझी

घर का दृश्य

(अनुराधा आती है और चक्कर खाकर गिर पड़ती है । रमेश दौड़ा-दौड़ा आता है)

रमेश: ओय ! क्या हुआ अनुराधा ? तुम्हें क्या हुआ ?
(रमेश जल्दी मे डॉक्टर को फोन करता है)
हैलो डॉक्टर विजय ! मैं रमेश बोल रहा हूँ । अचानक अनुराधा की तबियत खराब हो गई है । आप जल्दी से आ जाइए।
(रमेश अनुराधा को होश में लाने की कोशिश करता है । डॉक्टर आता है और अनुराधा को देखता है और उसकी जाँच करके एक इंजेक्शन लगाता है)

डॉक्टर : रमेश ! तुम्हारी बीबी को शायद जॉन्डिस हो गया है । तुम्हें इसका ब्लड टेस्ट, यूरिन टेस्ट कराना है फिर ये कन्फर्म होगा कि उसे जॉन्डिस है या नहीं । मैं तुम्हें कुछ दवाइयों के नाम लिख के दे रहा हूँ । इसे तुम मँगवा लेना और परहेज तो बहुत जरूरी है ।

अनुराधा की माँ का प्रवेश

माई : अरी बिटिया ! ई क्या हो गइल । हम तो सोचे रहे कि शहर में आके तू खूब मस्ती से रहवे लेकिन ई का हो गइल । तुम्हार तो तबियत खराब हो गइल ।

अनुराधा : अरी माई कुछ नहीं भइल । सब ठीक हो जाई ।अब तू आ गइल है तो सब ठीक हो जाई ।

माई : अच्छा सुन ! अब हम आ गइल है न तो इहाँ तो तोहार इलाज होए से रहा, हमार साथ गाँव चला । वहाँ से टनाटन होय के लौटिहा समझी ।

रमेश का प्रवेश

रमेश : (पाँव छूते हुए) अरे माँ ! आप कब आईं ?

माई : अरे अभी कुछ देर भवा है । अरे का बना के रखल बा हमार बिटिया के । कैसन हाल हो गई है हमार बिटिया के ।

रमेश : अरे माँ ! इसी की लापरवाही का नतीजा है । अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, परहेज करेगी तो ठीक हो जाएगी ।

माई : कुछ ठीक ठाक न होई यहाँ पर । गाँव चली, वहीं पर ठीक हो जाई ।

रमेश : पर माँ ! वहाँ पर डॉक्टर कहाँ है ? कौन करेगा इसका इलाज ?

माई : काहे, वहाँ पर और औरतन नहीं जाती हैं का ? हम तो वहीं पे ए के इलाज करवाइब । समझोय जमाई बाबू । हुआँ पर बड़े-बड़े ठीक होइ जात हैं।

रमेश : लेकिन माँ जी !

माई : लेकिन वेकिन कुछ नहीं । कल के टिकट बनवा दो ! हम लोग कल चले जायेंगे । और हम कुछ नहीं सुने चाहित । चल रे भुल्लकड़ ! सामान बाँध । तू भी हम लोगों के साथ चलेगा ।

ओझा के यहाँ

ओझा : ओम बम बोला । आ गई बच्चीया हम जानी थी । इसके क्या समस्या बाटे ? इकरे पति के कौनो दूसर औरत के साथ सम्बन्ध है, वो ही कर ले बाटे ।

माई : अब आपे इको इलाज कर । अच्छा भवा हम इसे इहाँ लैके आ गइल । नाहीं तो पता नहीं का हो जाइत ।

औझा : इकर तू कल रात के ली आव । हम इकरे इलाज कइ देब, ठीक हो जाई ।

ओझा के यहाँ का दृश्य रात का समय
(माँ और बेटी का प्रवेश)

ओझा : ओम बम बोल फट । आ गई बच्चीया । अब देख मेरा चमत्कार (बाबा अनुराधा को झाड़ता फूँकता है और कहता है) । जा बच्ची अब तू बिलकुल ठीक होइ जाब ।

दृश्य घर का
(अनुराधा की तबियत और खराब हो जाती है तो चारपाई पे लेटी रहती है)

माई : अरी ! का होगइल बिटिया तुम्हार तबियत तो लगत है और खराब होय गइल । लागत है चुडैल फिर कुछ कै दिल लगत है । कुछ फिर करे के पड़ी ।

दृश्य ओझा के यहाँ
(माँ का प्रवेश)

ओझा : ओम बम बोल । फिर आ गइल । का भा ! फिर कुछ गड़बड़ भइल का ?
माई : का बताई, बाबा ! फिर बिटिया के तबियत खराब हो गइल ।
ओझा : ऐसा कर आज रात में तु आय और आपन लड़की के थोड़े सा बाल काट कर के लय आय और एक मुर्गा लइआ । आज ओके बलि चढ़ाव ! तब फिर देख हमार कमाल । छूँ मंतर में जाई ओ के बीमारी ।

घर का दृश्य

अनुराधा : भुलक्कड़ ! लागत है हमार तबियत दिन पा दिन खराब होत चली जा रही है । अब तू इनके शहर जाकर खबर कर दोय । अब हमसे दर्द सहन न होत है ।
भुलक्कड़ : जी मालकिन ! मैं आज ही चला जाता हूँ ।
(भुलक्कड़ चला जाता है । अनुराधा दर्द से कराहती रहती है, उसकी तबीयत धीरे-धीरे और खराब हो जाती है)
अनुराधा : माँ.. माँ ! मुझे बहुत दर्द हो रहा है । (लेकिन कोई नहीं आता है)

दृश्य घर का
(अनुराधा चारपाई पर बेहोश पड़ी रहती है उसी समय रमेश भुलक्कड़ का प्रवेश)

रमेश : अनुराधा.... अनुराधा ! ये क्या हो गया तुम्हें ? मैं तुम्हें एक पल भी यहाँ नहीं रखूँगा । मैं तुम्हें अभी शहर ले चलूँगा ।

(माँ का प्रवेश)

माई : अरे जमाई बाबू ! ई आप का कह रहे हैं ? अरे ऐसे हालत में आप एका तो लै के जाएँगे । अरे अब सब ठीक होइ जाई । हमने सब इलाज कर दिया है । बाबा ने सब ठीक कर दिया है ।
रमेश : नहीं, अब एक पल भी मैं न रुकूँगा । भुलक्कड़ ! चलो, अभी चलो । मेरी बीबी की ऐसी हालत ! अरे आज विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली । सभी लोग नये नये तकनीक और उपकरणों का लाभ उठा रहे हैं और हम लोग आज भी इतने पिछड़े हैं कि बाबा के चक्कर में

फंसकर अपनी जान गवाँ रहे हैं। नहीं, मैं ऐसा हरगिज नहीं होने दूँगा। मैं अपनी बीबी को जरूर टीक कराऊँगा। भुलक्कड़ चलो।
(अनुराधा को हाथ में उठा कर चल देता है)

दृश्य- अस्पताल में

डॉक्टर : अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि बच्चे को हम नहीं बचा पाए क्योंकि बच्चा पहले ही गर्भ में मर चुका था। इसलिए "आई एम सारी"। आपकी बीबी बच गई है। परन्तु अभी बहुत कमजोर है। इनके स्वास्थ्य का आप बहुत ध्यान रखें। (डाक्टर चला जाता है, रमेश अनुराधा से मिलता है। अनुराधा रोती रहती है)

रमेश : भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि तुम बच गई और आइन्दा से मेरी बातों पे ध्यान देना। आज विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि सब कुछ संभव हो सकता है।

अनुराधाः- (रोती हुई) हमें माफ कर दो। हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई। अब हम ऐसी भूल नहीं करेंगे।

घर का दृश्य (एक साल बाद अनुराधा की गोद में बच्चा)

रमेशः- देखा तुमने चीज सही ढंग से किया और नतीजा तुम्हारे सामने है। ये विज्ञान का ही चमत्कार है कि आज तुम्हारी गोद में ये नन्हा सा बच्चा है। खुद भी स्वच्छ रहो और दूसरों को भी स्वच्छ रखने की राय दो।

आज विज्ञान की ही वजह से मेरी पत्नी यहाँ जीवित है। और आप भी विज्ञान पे विश्वास कीजिए और अपने जीवन में खुशहाली लाइए।

✠✠✠✠✠✠✠✠

नौटंकी

सेवा [illegible] इलाहाबाद के सौजन्य से

लिपैसी-चांदनी उर्फ मीठा जहर

मुंशी त्रिफला प्रसाद 'अनाथ'
गाँव : [illegible] पो दाँदूपुर, थाना घूरपुर,
[illegible], इलाहाबाद

(कवि)

दोहा: माँ बहनों व भाइयों, विनय करूँ कर जोर ।
ध्यान को केन्द्रित कीजिये, थोड़ा मेरी ओर ।।

चौपाई: थोड़ा मेरी ओर गाँव की यह है करुण कहानी ।
दुःखीराम साक्षर होकर, जीवन से की नादानी ।।
वेश्या-वृत्ति में लिप्त हुआ है दीन हीन अज्ञानी ।
दो बच्चों की माँ पूनम, पत्नी सहती हैरानी ।।

गज़ल: एक दिन जेठ में सूरज ने ऐसा झाँक दिया ।
धूप की गर्मी, कलेजे को चाक-चाक किया ।।
छोटे बच्चे मदन को उल्टी दस्त जारी हुआ ।
पल में मुरझाया सुमन रब ने खुशी खाक किया ।।

दोहा: क्या हुआ प्रभू माँ सोचे, आँचल से आँसू पोंछे,
दुःख के बादल हैं छाये,
देखि दसा निज लाल की अबला मन ही मन घबराये ।

दृश्यः (पूनम तीन वर्षीय मदन बेटे को गोद में लिपटाये बिलखती हुई दरवाजे पर बैठी है । तभी गाँव के दयालू पंडित आते हैं । पूनम घूँघट काढ़ते हुए खड़ी हो जाती है । बच्चे को द्वार पर खड़े खटोले पर लिटा कर)

पूनम (पाँव छूते हुए) पंडित जी पाय लागूँ ।

दयालू: खुशी रहो सौभाग्यवती ! घर दुवार बाल गोपाल से हरा भर रहे ।

पूनमः (मधुर स्वर में)
दोहा: पंडित जी तकलीफ क्यूँ, आप उठाये आज ।
राजे दिले करिये बयाँ जल्दी से महाराज ।।

दयालू:
दोहा: दुःखी राम घर में अगर बुलवाओ इस वक्त ।
उसी से करना है मुझे दिल की बातें व्यक्त ।।

पूनमः

ब.त.: उनको घर से गये आज दो दिन हुआ, अब तलक कुछ मिली है न खोज और न खबर ।
पति को न जाने क्या हो गया आज कल, मैं खुदी हूँ परेशान आठो पहर ।।

दयालु:

ब.त.: मेरा संदेश कहना घर आये जभी, इस महीने अदा न हुई ब्याज गर ।
याचना बिनती उसकी सुनूँगा नहीं, मेरा ताला लटक जायेगा जो ये घर ।।

पूनम (आश्चर्य से)

ब.त.: या विधाता मैं क्या सुन रही आज यह, पंडित जी आप इतना बता दीजिये ।
कब लिये आपसे कर्जा किस काम से, कितना रुपया दिया कुछ बता दीजिये ।।

दयालु:

ब.त.: दो महीने से हर तीसरे चौथे दिन, कभी दो सौ कभी तीन सौ ले गया ।
ये मुझे न पता, पैसा करता है क्या आज तक एक पाई नहीं दे गया ।।

पूनम (नम्रता से)

वार्ता: ठीक है पंडित जी, आप जाँय । वो जब भी घर आयेंगे आपके पास तत्काल भेजूंगी ।

दृश्य - (पंडित जी चले आते हैं । तभी रग्घू काका आते हैं, बच्चे की हालत देखकर)

रग्घू काका:

वार्ता: अरे ! दुःखी बहू । इस बच्चे को क्या हो गया है ? ये तो एकदम वेहोश है ।

पूनम (रोते हुए)

श्वम्सा कौवाली काका जी अभागिन से प्रभू, नाराज भारी हैं ।
अभी दो घन्टे से बस, इसको उल्टी दस्त जारी है ।।

रग्घू काका:

श्वम्भा कौवाली अरे पागल मती तत्काल चउरा पर चली जाओ ।
पूजा पर अभी बैठा है नत्थू ओझा दिखलाओ ।
मुझे लगता है इस पर पड़ गई शैतान की छाया ।
बचा लो जिन्दगी इसकी न चित चौतरफा दौड़ाओ ।

कवि :

दोहा : पूनम तत्क्षण गोद में, लीन्हूयों लाल उठाय ।
चली बहावत नैन जल ई दुख देखि न जाय ।।
इधर की छोड़ों दास्ता, उधर भी कीजै ध्यान ।
दुःखीराम की जिन्दगी, का कुछ पेश बयान ।।

दृश्य (चाँदनी नाम की वेश्या, सोलह श्रृंगार किये सजी-संवरी कोठे पर खड़ी रहती है । तभी दुःखी राम पहुँचकर मुस्कराते हुए) ।

दुःखीराम : (नशे में)

वार्ता : कहिये छम्मक छललो, आज ये चाँदनी किस चकोर के आगोश में झूमेगी, मचलेगी, नाचेगी, गायेगी ।

दृश्य -(चाँदनी दुःखीराम के गले में बाँहें डालकर नाचने गाने लगती है)

चाँदनी:

गाना: सनम सर ते चुन्दरिया सरकि जाला ।
मोरी पतली जब कमरिया लचकि जाला ।
कली कचनार करइ बगिया में चुलबुल ।
भंवरा चूमे रसवा चहकि रही बुलबुल ।।
मुन्द की गगरिया छलकि जाला ।। मोर.
मद गदराये इतराये नस-नस में ।
जुल्मी ई जवानी दिवानी नाहीं बस में
अच्छे-अच्छे की नजरिया बहकि जाला ।। मोर. ।।

(गाना खत्म हो जाता है)

दुःखीराम:

दोहा: बन्द करो जाने जिगर, घुँघरू की छम छम्म ।
जाम जवानी का पिला, जाने मन जम जम्म ।।

ब.त.: फुलझड़ी की लड़ी जिन्दगी की कड़ी, गुल वदन आके पहलू में सो जाइये ।
प्यास पहुँची चरम सीमा पे चाँदनी, एक दूजे में खो कर मजा पाइये ।।

दृश्य बनाइये - इधर दुखी राम चाँदनी के साथ शारीरिक सम्बन्ध में लीन है उधर नत्थू ओझा चउर पर बैठा अभुवा रहा है । तभी पूनम आती है । बच्चे को चउर पर लिटाकर -

पूनम (माथा टेककर)

दोहा: डिहवारिन मइया, मेरी जय जय भैरोनाथ ।
बालक पर करिये दया, कीजै दुख में साथ ।।

पूनम:

ग. करो महाराज हम दुखिया पे बस इतनी मेहरबानी ।
खताएँ माफकर सारी बचा लो इसकी जिंदगानी ।।

दृश्य (नत्थू ओझा चार छः लौंग जमीन पर बिखेर कर, एक लौंग हाथ में लेकर लौंग से लौंग छुवाकर जमुँहाते हुए)

नत्थू:

वार्ता या माई अलोपशंकरी ! औगढ़ बाबा ! दुहाई डिह डिहवारिन, मरी मसान मरघट लड्डू खाई, रक्त प्यासी काली मइया बालक को अभी चंगा कर दें ।

(बीरा देते हुए)

ग. खिलाओ इसको अभी लाल तेरा बोलेगा ।
औघड़ बाबा की कसम, जल्द आँख खोलेगा ।।

कवि

दोहा: पूनम बीरा को खिला बैठ गई खामोश ।
इक घन्टा बीता मगर तनिक न आया होश ।।

दिन ब दिन हालत हुई बच्चे की गम्भीर ।
बनिता बेचारी बिलखे, ठोक रही तकदीर ।।

दृश्य- (उसी समय विज्ञान सेवा फाउण्डेशन इलाहाबाद के प्रशिक्षक आते हैं । इकट्ठी भीड़ में घुस कर ओझा के पास पहुँचते हैं । बेहोश बालक को देखकर मन ही मन में सोचते हैं ।

प्रशिक्षक
वार्ता: या भगवान ! यह कैसी विडम्बना है कि आज भी गाँव के भोले भाले गरीब किसान, मजदूर, विज्ञान की नई-नई खोजों से अनभिज्ञ होकर अन्धविश्वास के शिकंजे में जकड़े हुए मौत का शिकार हो रहे हैं ।

पूनम से
दोहा: धीरे-धीरे पूनम बहन, करिये रोना बन्द ।
अक्ल से थोड़ा काम लों बनो न यू मतिमन्द ।।

पूनम (हाथ जोड़कर)
दोहा: भइया जीवन ज्योति में रही कालिमा छाय ।
मा ममता भव सिन्धु में बूड़इ औ उतिराय ।।

वार्ता: पूनम बहन ! अभी कुछ नहीं बिगड़ा है । भगवान की कृपा होगी तो कुछ नहीं होगा । मैं अभी डॉक्टर को बुलाकर ला रहा हूँ । तब तलक तुम स्वच्छ पानी को उबाल कर ठन्ड़ा करके १ लीटर पानी में चीनी व नमक मिलाकर बच्चे को पिलाती रहो ।

कवि
दोहा: जैसे शिक्षक ने कहा, वैसे पूनम नार ।
विधिपूर्वक लाल का करे प्रथम उपचार ।।

दृश्य (पूनम बच्चे को पानी पिला पिला रही है तभी शिक्षक महोदय डाक्टर को सथ लेकर आते हैं । इलाज करने के बाद)

डॉक्टर
ब.त.: अब तो घबराने की कोई बात नहीं, मर्ज पे काबू पाया नहीं है कसर ।
धीरे-धीरे मिले इसको आराम अब, हो गया था इसे कालरा पुरख्तर ।।
सिर्फ इक घन्टे तक गर न होती दवा, बच्चा मर जाता, इसमें न दो राय है ।
भूत प्रेतों के चक्कर में पड़ना सुनो, मौत को दावत देने का अध्याय है ।।

पूनम (हाथ जोड़ कर)
ब.त.: ता उमर भूल सकती नहीं डाक्टर, आपने जो किया ऐसा एहसान है ।
मेरी आँखे खुलीं आपकी बात सुन, अब तो भगवान का रूप विज्ञान है ।।

कवि
दोहा: दो घण्टे के बीच में आई जान में जान ।
मदन के लब पै खेलने, लगी मधुर मुसकान ।।
खुशी में पूनम लाल को लीन्ह्यो गले लगाय ।
नत्थू ओझा से कहें डाक्टर जी अर्थाय ।।

डॉक्टर
वार्ता: नत्थू अगर आज से अपने ढोंग, पाखण्ड, भूत प्रेत के चक्कर में फँसा कर किसी की जिन्दगी से खिलवाड करोगे तो कानून के माध्यम से हाथ पैर तोड़वा कर पूरी जिन्दगी जेल की सलाखों में सड़ा दूँगा ।

नत्थू ओझा (हाथ जोडकर डरते हुए)
वार्ता: नहीं डाक्टर साहब । मैं कभी भी भूलकर ऐसी नहीं करूँगा । आज से मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि विज्ञान सेवा फाउण्डेशन इलाहाबाद का सजग प्रहरी बनकर नव चेतना का दीप जलाकर विज्ञान की नई-नई बातों को जन-जन तक पहुँचाकर, गाँव-देश में सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित करूँगा

(डॉक्टर प्रशिक्षक, पूनम, नत्थू, अपने आपने घर आते हैं)

दोहा: किसी तरह से साथियों, बीत गया दो माह ।
पूनम के दिल में बढ़ी पति की चिन्ता डाह ।।
सज्जन गण अब ध्यान दो दुःखीराम की ओर ।
जिस दिन भोग विलास में हुआ बहुत कमजोर ।।
बीमारी ऐसी बढ़ी कि कुछ भी कहा न जाय ।
साफ दीखती हड्डियाँ, बदन गई पिराय ।।

दृश्य- (दुःखीराम अपने घर आ रहा है, रास्ते में दयालू पंडित को देखकर)

दुःखी राम
वार्ता: गुरू जी पांय लागूँ ।

दयालू
वार्ता: मस्त रहो दुःखी राम ! दिन दूना रात चौगना फूलो फलो । दो महीने तुम कहाँ गायब थे ?

दुःखीराम
ब.त.: क्या बताऊँ गुरू जी ! मुसीबत बला, बस, शहर ही में खाता कमाता रहा ।
रिक्शा लेकर किराये का फुटपाथ पर, दुःख भरी जिन्दगी को बिताता रहा ।।

दयालूः
ब.त.: देख तुमको बहुत मैं तो हैरान हूँ, हो गया इतना कमजोर क्या बात है ।
मक्खियाँ मुँह में आने जाने लगीं, कैसी भगवान शहर की करामात है ।।

दुःखीराम
क.ग.: दो महीने से गुरू जी, एकदम से बीमार हूँ ।
डूबती नइया का टूटा फूटा इक पतवार हूँ ।।
काम अब होता नहीं, भूखा भी न रह पाऊँगा ।
इसलिए मैं गाँव घर में आने पर लाचार हूँ ।।

दयालू (आँख लाल करके)
क.ग.:मिल गये तुम अच्छे मौके पर नहीं तइयार हूँ ।
सूल करके रुपया आता, तू अति बद्कार हूँ ।।
पन्द्रह सौ रुपया अभी तत्काल दीजिये ।
या तो घर लिख नाम मेरे, वर्ना मैं अंगार हूँ ।।

दुःखीराम

ब.त. चूमता हूँ गुरु जी कदम आपका, दो महीने की मुहलत मुझे दीजिये ।
चाहे जो कुछ करूँ कर्जा दूँगा सभी, घर को न लिखवाइये न दया कीजिए ।।

दयालु : (गाल पर थप्पड़ मारकर)

ब.त. : बेसरम बदजुबां नीच सुन गौर से, तीन दिन का समय मैं तुम्हें दे रहा ।
चुकता कर दो मेरा कर्जा, ले दे कहीं, कर दिखाऊँगा सच वर्ना जो मैं कहा ।।

कवि

दो. पंडित जी तब चल दिया, खोटी खरी सुनाय ।
दुर्खीराम निज मनही मन, सोच सोच पछताय ।।

दुखी राम (सोचकर)

वार्ता : या भगवान ! अगर मैं गाँव घर में जाता हूँ, तो पंडित रोज खरी खोटी सुना कर जूतों के सर गंजा कर देगा । चाँदनी की भी जिससे मालुम हुआ कि मुझे एड्स हो गया है पास में बैठने तक नहीं देगी । मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, चारो तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता है । (सोचकर) अब हमारे लिए यही सबसे यही अच्छा है कि खुदकसी करके अपनी जीवनलीला यहीं समाप्त कर दूँ । दृश्य (दुखीराम आम के पेड़ में रुमाल द्वारा फाँसी का फंदा बनाकर झूल जाता है । तभी अचानक नत्थू आ जाता है । फॉसी का फन्दा काट देता है । दुखीराम जमीन पर गिर पड़ता है ।)

दुखीराम (अँकवार में भरकर)

ग. दुखी क्या बात, जो तुमने किया, यह जुल्म भारी है ।
अजी क्यूँ आत्महत्या कर रहे क्यूँ दिल-दुखारी है ।।

दुखीराम (होश में आकर)

ग. बताये क्या अधम पापी, बड़ी अटपट कहानी है ।
नरक से भी हुई बदतर हमारी जिन्दगानी है ।।
किया कुकर्म जो मैंने उसी का फल मिला मुझको ।
जहर नस-नस में मेरे एड्स का, न खून-पानी है ।।

नत्थू (समझाते हुए)

दो. दुखीराम इस जिन्दगी से मत हो निराश ।
दृढ़ इच्छा संघर्ष पर, रख कायम विश्वास ।।

वार्ता दुखीराम ! अब जो होना था वो तो हो ही गया । लेकिन जो जीवन शेष बचा है उसको देशहित के लिए समर्पित कर दो ।

दुखीराम (दुखी स्वर में)

वार्ता मैं इस हाल में क्या कर सकता हूँ ।

नत्थूराम

वार्ता तुम बहुत कुछ कर सकते हो । आओं मेरे साथ- चलें गॉव-गॉव में घूम कर स्वच्छता, पर्यावरण प्रदूषण, एड्स जैसी भयानक बिमारी के बारे में जानकारी देकर जैसे लोगों का जीवन बचायें । दुखीराम व नत्थू गीत गाते हुए चल देते हैं । (दोनों साथ में) गीत

गीत

माना बतिया इहइ हमारी मोर हजारी बिरना ।।टेक।।
पर नारी से भूलि किहयो ना शारीरिक सम्बन्ध ।
सुखी सुगन्धित यह जीवन में घोलेयु जिन दुरगन्ध ।
लाइलाज एड्स बीमारी ।मोर.
पप्पू प्रीती पढाई लिखई लायक भेजा स्कूल ।
साक्षरता अभियान में सामिल कइदा दूनौ फूल ।।
विद्या जन जीवन हितकारी ।।मोर.।।
पेड़ वृक्ष बारी फुलवारी, जेतना जने लगउल्या ।।
मन्द सुगन्ध हवा शीतल से तन तापिस बुझउल्या ।।
भागे दूर सभइ बीमारी ।।मोर.।।
दम्पत्ति जीवन तबइ सुखी परिवार रहे जब छोटा ।
तबई अटे घर भर के खाना कपड़ा टाठी-लोटा ।।
'त्रिफला' जनहित सेवाकारी ।।मोर.।।

✠✠✠✠✠✠✠✠
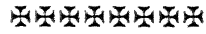
चतुर किसान

दीपक प्रताप सिंह लोधी

किसी जमाने में कहीं एक जागीरदार रहता था । वह बड़ा ही अमीर और बड़ा ही घमंडी था। कुछ गिने चुने लोगों से ही वह वास्ता रखता था। किसानों मे तो बिल्कुल ही नहीं । उनसे उसे मिट्टी की बू जो आती थी। उसने अपने नौकरों को हुक्म दे रखा था कि वे लोग नजदीक आने की हिमाकत करें तो उन्हें दूर भगा दिया जाय।

एक दिन किसान इकट्ठे होकर जागीरदार के बारे में चर्चा करने लगे, "मैंने जागीरदार साहव को वहुत नजदीक से देखा है, खेत में उनसे मेरी मुलाकात हुई थी," एक ने कहा,

"मैंने कल बाड़ के ऊपर से झाँका तो जागीरदार साहव को बरामदे में काफी पीते पाया"।

तभी एक और किसान उनके पास आया जो सबसे अधिक गरीब था। उनकी बातें सुनकर वह हँसने लगा। यह कौन-सी बड़ी बात है। बाड़ के ऊपर से तो कोई भी जागीरदार को देख सकता है। मैं अगर चाहूँ तो उनके साथ खाना भी खा सकता हूँ।

"अरे हठो भी" पहले दोनों किसान बोले, "जैसे ही वह तुम्हें देखेगा, वैसे ही कान पकड़कर बाहर निकालने का हुक्म दे देगा। वह तुम्हें घर के पास भी नहीं फटकने देगा।"

पहले दोनों किसान इस तीसरे किसान की खिल्ली उड़ाने और उस पर फब्तियाँ कसने लगे। वे बोले "अगर तुम जागीरदार साहब के साथ खाना खा लोगे तो हम तुम्हें गेहूँ की तीन बोरियाँ और एक जोड़ी बैल देंगे । अगर ऐसा नहीं कर पाये तो तुम्हें हमारी बात माननी पड़ेगी।"

"मंजूर है" कहकर तीसरा किसान जागीरदार के अहाते में पहुँचा।
जागीरदार के नौकर उसे देखते ही वहाँ से खदेड़ने लगे।

"जरा रुको" किसान बोला मैं, जागीरदार साहब के लिए एक खुशखबरी लेकर आया हूँ।
"क्या खुशखबरी लाये हो?

"और किसी को नहीं, केवल जागीरदार साहब को बताऊँगा... जागीरदार के नौकर अपने मालिक के पास गये और जो कुछ किसान ने कहा था, कह सुनाया।
जागीरदार को जिज्ञासा हुई । लालची जागीरदार ने सोचा, हो न हो कि वह कोई बड़े काम की बात बताना चाहता है ।

"उसे अंदर ले आओ" उसने नौकरों से कहा । नौकरों ने किसान को अन्दर भेज दिया। किसान ने जागीरदार से कहा,"हुजूर, मैं आपसे एकांत में बात करना चाहता हूँ। अब जागीरदार की जिज्ञासा चरम बिन्दु पर जा पहुँची। जैसे ही वे दोनों अकेले रह गये वैसे ही किसान ने धीरे से कहा- "श्रीमान् जी, मुझे यह बताने की कृपा करें कि घोड़े के सिर के बराबर सोने की क्या कीमत होगी ?"

"तुम यह किस लिए जानना चाहते हो" जागीरदार ने कहा । "इसका भी कारण है" जागीर की आँखे

चमक उठीं और उत्तेजना से उसके हाथ काँपने लगे।

"यो ही तो मुझसे प्रश्न नहीं पूछ रहा" उसने मन ही मन सोचा, "जरूर कहीं कोई खजाना इसके हाथ लग गया है !" जागीरदार ने किसान से बात निकलवानें की कोशिश की।

"भले मानस, जरा यह तो बताओ कि तुम किसलिये यह जानना चाहते हो?" उसने फिर पूछा। किसान ने आह भर कर कहा "अगर आप नहीं बताना चाहते तो न सही। अच्छा मैं अब चलता हूँ। जाकर खाना खाना है।"

जागीरदार अब घमंड भूल गया ! वह लालच से बुरी तरह काँपने लगा था। "मैं इस किसान को मूर्ख बनाकर इससे सोना निकलवा लूँगा" उसने मन ही मन सोचा । फिर वह किसान से बोला "सुनो तो भले मानस तुम्हें घर जाने की ऐसी क्या जल्दी है। अगर तुम्हें भूख लगी है तो यहीं मेरे साथ खाना खा सकते हो"। इतना कह कर उसने अपने नौकरों को खाना लगाने का आदेश दिया। नौकरों ने झटपट मेज लगा दी । शराब और खाने की चीजें लगाकर रख दीं जागीरदार किसान की ओर कभी एक और कभी दूसरी चीज बढ़ाता हुआ कहने लगा "भले मानस ! खूब खाओ, पियो !जरा भी तकल्लुफ न करो।"

किसान खाता और पीता रहा। किसान ने जब खूब पेट भर कर खा लिया तो जागीरदार ने कहा - "अच्छा अब तुम जाओ और घोड़े के सिर के बराबर सोना ले आओ, तुम्हारी बनिस्वत वह मेरे कहीं ज्यादा अच्छी तरह काम आयेगा।
तुम्हें इनाम में दस रुपये दूँगा।"

✠✠✠✠✠✠✠✠

नाटक
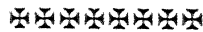
ध्वनि का प्रभाव

सुशील प्रताप सिंह लोधी
35 ई.डब्ल्यू.एस अशोक नगर (कब्रिस्तान के पास) इलाहाबाद

रमेश (अपने दोस्त अजय से बोलता है) मेरा पढ़ने का समय हो गया है। अब मैं पढ़ूँगा । कल मेरी परीक्षा भी है। अजय! तुम्हें पढ़ना हो तो तुम भी बैठकर पढ़ो।

अजय अरे रमेश क्या पढ़ोगे ? आज मेरे दोस्त की शादी है। चलो वहाँ मौज मस्ती करेंगे।

रमेश नहीं अजय।

(अजय चला जाता है। रमेश बैठकर पढ़ने लगता है। उसी के घर के पास उसके चाचा का लड़का विजय बहुत खराब था)

विजय (अपने घर में दोस्त से बोलता हुआ) अरे अमित ! पढ़ने का मन नहीं कर रहा है।

(उसी समय विजय का दोस्त अमित बोलता है)

अमित रेडियो कहाँ रखा है?

विजय बगल वाले कमरे में रखा है । ले आओ ।

(अमित रेडियो लाता है और विजय रेडियो तेज आवाज में बजाता है। उस समय रमेश पढ़ रहा था)

रमेश (अपने कमरे में ही कहता है) इस समय रेडियो कौन बजाने लगा? बाहर जाकर देखता हूँ, कौन रेडियो बजा रहा है।

(बाहर जाकर देखता है तो उसके चाचा का लड़का विजय रेडियो बजा रहा है)

रमेश (बोलता है) ! विजय ! रेडियो बन्द कर दो। कल मेरी परीक्षा है।

(लेकिन वह रेडियो नहीं बन्द करता । रमेश तेज आवाज में पढ़ता है। अगले दिन रमेश परीक्षा देने जाता है)

(जब परीक्षाफल निकलता है तो रमेश पास हो जाता है और विजय फेल हो जाता है)

रमेश (विजय के घर) विजय दरवाजा खोलो।

(विजय दरवाजा खोलता है)

रमेश विजय अगर तुम रेडियो तेज आवाज में न चलाते तो आज तुम फेल नहीं होते।

विजय रमेश भाई ! आज से मैं कभी रेडियो नहीं बजाऊँगा और मन से पढ़ाई करूंगा।

✠✠✠✠✠✠✠✠
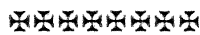
जादू का चमत्कार

नगेन्द्र प्रताप सिंह
युवा जादू सम्राट, मोरहूँ मलाका, हरहक
फाफामऊ, इलाहाबाद

(१)

भाइयो और बहनो! प्यारे बच्चो!अब हम आपको दिखलाते हैं जादू चमत्कार ! इन चमत्कारों के साथ-साथ हम आपको कुछ बातें भी बतायेंगे। यदि उन बातों को ध्यान से सुनोगे और उन पर अमल करोगे तो आपके जीवन में भी चमत्कार हो सकता हे। आप लोग विज्ञान के बारे में तो जानते ही होंगे। आज हम आपको उनके बारे में जादू का खेल दिखायेंगे। (जादूगर अपने हाथ में एक छड़ी लेता है और घुमाता है। एक गुलदस्ता बन जाता है) ईंधन है हम पेंडों का सफाया तो करने जाते हैं लेकिन भूल जाते हैं कि पेड़ों के माध यम से प्रकृति अपने संसाधन को प्रेषित करती है। हम लोग जो ऑक्सीजन सॉंस के द्वारा लेते हैं वही पेड़ पौधों के माध्यम से मिलती है। पेड़-पौधे न हो होते तो शायद यहाँ रेगिस्तान ही होता। जल की भी समस्या होती। इसलिए सभी को अधिक से अधिक वृक्ष लगाना चाहिये । वृक्ष हमारे जीवन के मुख्य आधार हैं । निरन्तर प्राणी जगत सेवा में रत हैं।

(२)

(जादूगर सिगरेट पाइप एक हॉंथ में लेकर आता है लेकिन देखते देखते दो हो जाता है। इस तरह से वह बीच बीच में बढ़ता घटता रहता है)

हवा में जहरीला तत्व एक निर्धारित मात्रा में अधिक बढ़ जाता है तो मनुष्य तथा पेड़ पौधों सहित सभी जीव जन्तुओं को हानि पहुँचती है। आज हमारे चारों तरफ प्रदूषण धुआँ के कारण सॉस लेना भी भारी हो जाता है। धुँए की वजह से वायु प्रदूषित होता है तो सॉस एवं खून की बीमारियाँ होती हैं। इस लिए अगल बगल चारों तरफ वायु प्रदूषण दूर करने का प्रयास करें।

(३)

(जादूगर हाथ में एक कागज पर बना चित्र लेकर आता है । वह चित्र एक भूत का होता हे। जादूगर उसे फूँक मारता है तो वह कागज चित्र सहित जल कर राख हो जाता है)

जादूगर बताता है- कि भाई ! गाँव में ओझा और हकीम भोले भाले आदमियों को तन्त्र नाम पर कैसे ठगते हैं। ये जो जादू दिखाया हमने ये विज्ञान का चमत्कार है। एकमात्र फास्फोरस की वजह से जला।

✠✠✠✠✠✠✠✠